

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mistryji, what I read out is only the decision of the Business Advisory Committee. If you want to increase the time, when it is taken up for discussion, you are free to raise it at that point of time. The House can always take a decision on that. What I have reported is the BAC decision. The House is supreme and it can take a decision. If the House wants, it can extend the time.

With regard to the other point you raised on assurance, if the Minister has given an assurance, then there is a Committee on Assurances.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: Sir, the Minister gives assurance only during Question Hour. When we raise an issue in Zero Hour, when the Parliamentary Affairs Minister assures us that he would talk to the concerned Minister, nobody knows what happens after that. ...*(Interruptions)*... I want a ruling on that.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Even if it is a Zero Hour mention, if the Minister has said in the House that he would examine it or convey it to the concerned Minister, it is an assurance. The Committee on Assurances can take up that.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: Then this rule should prevail, Sir.

DISCUSSION ON DEMONETIZATION OF CURRENCY — *Contd.*

श्री प्रफुल्ल पटेल: डिप्टी चेयरमैन सर, यह चर्चा 8 नवम्बर, 2016 को सरकार के द्वारा लिए हुए निर्णय पर है। सरकार के द्वारा अचानक 500 रुपये और 1000 रुपये के नोट, जो हमारे देश में चलन में थे, उसी वक्त से बंद करने के बारे में जो निर्णय लिया गया और उसके पश्चात देश में जो परिस्थिति निर्मित हुई, उसी पर आज हमारा सदन चर्चा कर रहा है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री तिरुची शिवा) पीठासीन हुए]

काले धन को समाप्त करने के लिए, आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिए या नकली नोटों के चलन को रोकने के लिए सरकार की जो पहल थी, मैं समझता हूँ कि उसका सारा देश और देश के सारे राजनीतिक पक्षों ने स्वागत किया है। इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए जो सरकार के द्वारा कदम उठाए गए, उनके लिए हमने कहा था कि जहां तक इन उद्देश्यों की पूर्ति का सवाल है, उसके लिए ये कदम सही हैं। जब इस तरह के कदम उठाए जाते हैं, तो स्वाभाविक है कि उसके पश्चात होने वाली परेशानियों से निपटने के लिए अथवा इस तरह के लक्ष्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त तैयारी होनी चाहिए। स्वाभाविक तौर से हम सभी लोगों को यह लगा कि सरकार ने निश्चित ही इसकी पूरी तैयारी पहले से ही की होगी, क्योंकि हमारा देश कोई छोटा देश नहीं है।

अभी हमारे कुछ मित्र स्वीडन की बात कर रहे थे। जब हम विश्व के अन्य देशों की बात करते हैं, तो सबसे पहले हमें यह सोचना होगा कि वहां की अर्थव्यवस्था और हमारे विशाल भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत अंतर है। हमारा देश 125-130 करोड़ की विशाल आबादी का देश है और

[श्री प्रफुल्ल पटेल]

विशेष बात यह है कि हमारे यहां कैश इकोनॉमी का चलन है, अन्य देशों की तरह बैंकिंग या प्लास्टिक इकोनॉमी हमारे यहां नहीं है। महोदय, जब यहां पर वर्ष 1978 की डीमॉनेटाइजेशन की बात हुई, तो वर्ष 1978 में पूरे देश की चल मुद्रा का एक प्रतिशत मुद्रा बड़े नोटों में थी, बाकी सारी मुद्रा छोटे नोटों में थी। अब यदि वर्ष 1978 में डीमॉनेटाइजेशन हुआ और अब अगर हम आज वर्ष 2016 में उसी तरह से डीमॉनेटाइजेशन कर के अपने लक्ष्य की पूर्ति करना चाहते हैं, तो मैं समझता हूँ कि इस प्रकार हम अपने आपको ही झांसा दे रहे हैं। इस बात को कोई भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और अभी सब लोगों ने आंकड़े दिए, परन्तु मैं उन्हें दोहराऊंगा नहीं, लेकिन यह जरूर करना चाहता हूँ कि जहां आज देश की मुद्रा 87 परसेंट बड़े नोटों, यानी 500 और 1000 के नोटों में है, वहां जब सरकार इतना बड़ा कदम उठाती है और इतना बड़ा निर्णय लेती है, तो हमें तो 8 तारीख की रात को अपेक्षा यही थी कि निश्चित रूप से 9 तारीख की सुबह से सरकार ने इसे काउंटर करने के लिए पूरे कदम उठाए होंगे और सारे प्रावधान किए होंगे, जिससे सामान्य लोगों या देश की अर्थ व्यवस्था पर इसका कोई विपरीत असर न हो।

महोदय, अभी मैं देख रहा था और मैं बताना चाहता हूँ कि 50 रुपए का नोट आज मेरे हाथ में भी बहुत दिनों के बाद आया है, नहीं तो आजकल 500 और 1000 रुपए का नोट सबके हाथ में होना स्वाभाविक बात है, लेकिन इस छोटे से नोट में भी लिखा हुआ है कि "I promise to pay the bearer the sum of fifty rupees." या मुद्रा के ऊपर जो भी आंकड़ा है और गारंटी है कि "I promise to pay." हालांकि 50 रुपए के नोट के ऊपर गवर्नर, रिजर्व बैंक नहीं लिखा है, मगर जो भी है। कहने का मतलब यह है कि यह हमारे देश का लीगल टेंडर है और इसमें सरकार या जो हमारा सेंट्रल बैंक है, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, इसके माध्यम से हर व्यक्ति को यह एक आश्वासन मिला हुआ है कि यह मेरा पैसा है और जब भी मैं चाहूंगा, इस मुद्रा का मूल्य मुझे हमेशा प्राप्त होगा। आपने 500 रुपए के नोट में लिखा है "I promise to pay." वही लिखा है, जो इसमें लिखा है।

महोदय, कहने का मतलब यह है कि आज जब 87 प्रतिशत हमारे देश की मुद्रा चलन में है और उसे रातों-रात बन्द कर दिया गया, तो स्वाभाविक है, जैसा बहन जी ने कहा कि देश में एक अफरा-तफरी का माहौल निर्मित हुआ है और आज किसी भी व्यक्ति को यह समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे करना क्या है। अब 87 परसेंट मुद्रा और वह भी भारत जैसे देश में चलन से बाहर हो जाए, तो स्वाभाविक है कि देश में अफरा-तफरी का माहौल बनेगा। आज हमारा देश अमेरिका की तरह नहीं है, जहां पर दूध लेना है या दूधपेस्ट लेना है, तो कन्वीनिएंट स्टोर में गए और वहां अपना एक क्रेडिट कार्ड स्वाइप कर दिया और वहां से जो भी चीज लेनी है, ले ली। इसी प्रकार से यदि पेट्रोल पम्प पर गए, तो वहां भी कोई कैश लेता नहीं है। वहां पर भी क्रेडिट कार्ड से काम होता है।

महोदय, अभी हमारे देश में मुश्किल से 2 करोड़ क्रेडिट कार्ड हैं और हमारे देश में 130 करोड़ लोग हैं। हम कहां से इसकी पूर्ति करेंगे, कहां तक हम लोगों को क्रेडिट कार्ड इश्यू करेंगे। हमारे देश में यदि 2 करोड़ क्रेडिट कार्ड हैं, तो यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। इसका मतलब यही हुआ कि आज देश के 100 आदमियों में भी मुश्किल से एक आदमी के पास क्रेडिट कार्ड नहीं है। That is why that is the problem. New ATMs have to be recalibrated because

वह नोट के साइज के साथ मैच नहीं हो रहा है। इसलिए आज सुबह ही मुम्बई से मुझे मेरे एक मित्र का फोन आया कि मेरी पत्नी आज अलग-अलग 12 एटीएम में गई, लेकिन एक भी एटीएम काम नहीं कर रहा था। यह परिस्थिति आज मुम्बई में है और यही परिस्थिति आपको दिल्ली के पार्लियामेंट हाउस में नजर आती है। अब आप सोचिए कि जब यहां हमारे बड़े शहरों में और बड़ी जगहों पर यह परिस्थिति है, तो छोटे-छोटे शहरों में क्या स्थिति होगी? आज ओडिशा के किसी छोटे गांव में जाइए या तमिलनाडु के किसी बैकवर्ड एरिया में जाइए या झारखंड अथवा पंजाब के किसी छोटे कस्बे में चले जाइए, तो आपको पता चलेगा कि वहां इस परिस्थिति का लोग कैसे सामना कर रहे होंगे। यह तो कल्पना के बाहर है। हम लोग केवल यहां कह रहे हैं। मीडिया को तो सब बातें अच्छी-अच्छी नजर आ रही हैं, लेकिन निश्चित रूप से हम लोगों को इस बारे में चिन्तन करना चाहिए और इसी वजह से आज हम इस हाउस में इस अहम चर्चा में भाग ले रहे हैं। सर, इस बात का फैसला 8 तारीख को हुआ, उसी दिन शाम को मेरा एक नौकर, जो मेरे घर में काम करता है, वह 50 हजार रुपये का एडवांस लेकर अपनी बहन की शादी करने को जाने के लिए ट्रेन में बैठा। वह शादी चार दिन बाद थी। वह ट्रेन में अभी बैठा है और वह अभी गांव भी नहीं पहुँचा है, उसके पहले ही इन नोटों का चलन बन्द हो गया। अब उस व्यक्ति की अपने गांव में पहुँचने तक यह अवस्था हो गई कि उसको वहां से पहले तो आगे घर जाने के लिए टैक्सी वगैरह की जरूरत थी, वही उसको नहीं मिल रही थी। जैसे-तैसे वह किसी तरह अपने गांव में पहुँचा और वहां से उसने मुझे फोन करके कहा कि साहब, इसमें आप मेरी मदद कीजिए। मैंने कहा कि देखो, हम कितने भी सामर्थ्यवान होंगे, लेकिन इस मामले में हम तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते। सर, हम क्या मदद करेंगे? उसके 50 हजार रुपये फिजिकल कैश को उसके गांव में छोटे नोटों में कन्वर्ट करके मैं भी क्या दे सकता हूँ, आप भी क्या कर सकते हैं? जितना वह असहाय था, उतना ही असहाय मैं भी अपने आपको महसूस कर रहा था। इसी वजह से आज जो पूरे देश में परिस्थिति निर्मित हुई है, इसके बारे में अभी भी सरकार को शायद..

पीयूष भाई, आपने यहां पर सरकार का पक्ष रखा। सरकार के उद्देश्य के बारे में यहां पर किसी ने भी प्रश्न नहीं उठाया है, लेकिन आप जब इतना बड़ा कदम उठाते हैं, तो उसके लिए आपकी पूर्व तैयारी जो होनी चाहिए थी, इसके बारे में आपने कुछ भी नहीं कहा है। इसीलिए मैं मुम्बई का भी कल का एक किस्सा बताता हूँ। आपको वह जगह पूरी तरह से मालूम है—कालबा देवी। पिकेट रोड से मन्दिर के लिए जब टर्निंग करते हैं, वहां पर एक बैंक की ब्रांच है। वहां पर बहुत सारे लोग जमा थे। बैंक के बाहर जो माहौल था, लिट्रली लोग एक-दूसरे के ऊपर चढ़ाई कर रहे थे, एक-दूसरे को कोस रहे थे। मैंने खुद गाड़ी खड़ी करके, उसका कांच उतार कर सुना। वे आपको भी बहुत अच्छी तरह से, प्यार भर कर, ढेर सारा कोस रहे थे।

श्री पीयूष गोयल: उपसभाध्यक्ष जी, ये जो 14 लाख करोड़ रुपये 500 और 1000 रुपये के नोट के रूप में थे, इन पर मैंने अपनी बात में कहा कि आधे से भी अधिक नोटों के सीरियल नम्बर बैंकिंग सिस्टम में आ ही नहीं रहे थे, जिसकी वजह से यह आकलन हुआ कि हो सकता है कि पैसे की कुछ होर्डिंग हुई हो। पहली बात तो यह है। सर्कुलेशन में जो 6-7 लाख करोड़ रुपये थे, उतना पैसा चंद ही दिनों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाएगा। अगर हम सब इसकी होर्डिंग न करें और नये नोटों को फिर से एक बार मार्केट में आने दें, इसे सेंसेशनलाइज न करें, जब उद्देश्य सबको अच्छा लगा है, उद्देश्य अच्छा है..

एक माननीय सदस्य: होर्डिंग कैसे हुई, यह तो बताइए। ...**(व्यवधान)**...

श्री पीयूष गोयल: एक मिनट। He has yielded to me for a minute. आप भी अपनी बात जरूर रखिएगा। मैं सिर्फ यह कह रहा हूँ कि अगर लोग थोड़ा सब्र रखें और तीन-चार दिन में यह मामला सुधर जाए, तो उसमें सभी का हित है। जब सभी उद्देश्य की तारीफ कर रहे हैं, तो ब्लैक मनी खत्म करने के उद्देश्य में हम सबकी सहमति है। अगर हम यह अफरा-तफरी न मचाएँ और लोगों को भेज-भेज कर डुप्लीकेट लाइन में खड़ा न हों, तो चन्द ही दिनों में अपने-आप ही यह मामला सुलझ जाएगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रफुल्ल पटेल: आपने यहां पर स्पष्टीकरण किया। आप ही सोचिए। आप बात कर रहे हैं कि लोग लाइनों में दोबारा खड़े न रहें और अफरा-तफरी न मचाएँ। एक आदमी को मुश्किल से आप 4,000 रुपये नोट बदल कर दे रहे हैं। यदि आपने उसको एक बार 4,000 रुपये नोट बदल कर दे दिया, तो क्या उसका काम हमेशा के लिए पूरा हो गया?

श्री पीयूष गोयल: अपने बैंक से वह 24,000 रुपये निकाल सकता है।

श्री प्रफुल्ल पटेल: क्या बात कर रहे हैं आप? ...**(व्यवधान)**... क्या बात कर रहे हैं? ...**(व्यवधान)**... कौन सा बैंक 24,000 रुपये देगा? ...**(व्यवधान)**... जरा बताइए, 24,000 रुपये किसके पास हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री मोहम्मद अली खान (आंध्र प्रदेश): सर ...**(व्यवधान)**... आप थोड़ा बैंकों में जाइए। ...**(व्यवधान)**...

جناب محمد علی خان: سر، --- (مداخلت) --- آپ تھوڑا بینک میں جائیے
--- (مداخلت) ---

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): सर ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रफुल्ल पटेल: मैं समझता हूँ कि आप जितना कम बोलेंगे, शायद आप बचेंगे। आप ज्यादा मत बोलिए, क्योंकि जो परिस्थिति ग्राउंड पर है, वह बिल्कुल अलग है। मैं आपको कह रहा हूँ।

श्री पीयूष गोयल: सर, बैंक में डिपॉजिट करके 24,000 रुपये निकाले जा सकते हैं।

श्री प्रफुल्ल पटेल: पीयूष भाई, आप मेरी बात सुनिए। मैं आपकी कोई आलोचना नहीं कर रहा हूँ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please address the Chair.

श्री प्रफुल्ल पटेल: लेकिन आम आदमी की जो परेशानी है, हम भी और आप भी, सब इस सदन में जन-प्रतिनिधि के तौर पर बैठे हैं। आज क्या परिस्थिति है? आप यह जो काले धन की बात कर रहे हैं, बड़े लोगों का काला धन... ये सब बात छोड़िए। 99 परसेंट लोग, जो आपको ज्यादा से ज्यादा मानने वाला छोटा व्यापारी, छोटा धंधा करने वाला, जो अपनी धोती में पैसा बांध कर बाजार में जाकर खरीद-बिक्री करता है, उसको आपने जो आघात पहुंचाया है, उसका अंदाजा अभी आपको लगा नहीं है। आपके लिए यह बात सोचने वाली है। बहन जी को मालूम है

† Transliteration in Urdu script.

कि हापुड़ और हाथरस की मंडी में अभी गुड़ की जो चक्की बनती है, वहां पर जो व्यापारी गांव या कहीं और से गुड़ खरीदने के लिए आता है, उसको कोई पहचानता नहीं है, जब वह धोती में पैसा बांध कर लाता है और वहां नोट रखता है, तब उसके ट्रक की लोडिंग और अनलोडिंग होती है। वहां पर उसका कोई चेक मंजूर नहीं करता है और उसका कोई आरटीजीएस नहीं होता है, उसका कोई बैंक अकाउंट नहीं होता है। 90 per cent of India's trade is in the informal sector and you cannot change that. आप नोट बदलने की मंशा रखिए, यह खुशी की बात है, लेकिन आज जो उसको परेशानी हो रही है, उसका क्या? हमारे और आपके लिए इधर बोलना बहुत आसान है, लेकिन अगर आज एक दिन हमको और आपको घर जाने पर बीवी, बच्चे पूछें कि आज हमारे लिए खाने का क्या इंतजाम है और अगर हम उनके खाने का इंतजाम नहीं कर सकते हैं, तो उस घर में, उस परिवार पर क्या बीत रही होगी? किसी के बच्चे के स्कूल की फीस भरनी है, वह नहीं भर पा रहा है या जैसे मैंने शादी का उदाहरण दिया, बहुत सारे अनगिनत ऐसे उदाहरण हैं, जिनको अलग-अलग वक्ताओं ने अपने-अपने भाषण में कहा है। मैं हर चीज को दोहराना नहीं चाहता हूँ।

श्री माजीद मेमन (महाराष्ट्र): पीयूष जी ने जो बात कही है, उसके संबंध में मैं कुछ सुधार करना चाहता हूँ। कोई आदमी 24 हजार रुपए अपने अकाउंट से तभी निकालेगा, जब वह उसके अकाउंट में होगा। ...*(व्यवधान)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please, don't respond to that.

श्री प्रफुल्ल पटेल: इसको छोड़ दीजिए, I am not going into that.

श्री पीयूष गोयल: आप डिपॉजिट करके निकाल सकते हैं। ...*(व्यवधान)*...

श्री प्रफुल्ल पटेल: पीयूष जी, मैं आपकी ...*(व्यवधान)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Mr. Praful, please address the Chair...*(Interruptions)*...You need not respond to each and every point. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: Sir, the hon. Minister should not make incorrect statement...*(Interruptions)*...Please correct him...*(Interruptions)*...

श्री प्रफुल्ल पटेल: आनन्द जी, आज बाजार में, मंडी में, दिल्ली की मंडी में चले जाइए, हिन्दुस्तान के हर गांव, शहर में छोटे-छोटे बाजार लगते हैं, हफ्ते के बाजार लगते हैं। वहां पर उन बाजारों में कितनी सब्जियां सड़ गईं, किसी ने मछली की बात कही, कितना फ्रूट सड़ रहा होगा, जिसको आज के आज कमा कर खाना है, उसको आज मजदूरी नहीं मिली, आज हमारे महाराष्ट्र में, अभी पवार साहब कह रहे थे कि वहां पर खेतों में जो गन्ना कटाई होती है, उसको जो मजदूरी चुकानी होती है, वह नहीं हो पा रही है। वहां पर कटाई के सीजन में मजदूर बाहर-बाहर से आते हैं, लेकिन आज उसको मजदूरी नहीं मिल पा रही है। आज कितने सारे ऐसे informal sectors हैं। मैं बीड़ी उद्योग से जुड़ा हुआ हूँ, मुझे मालूम है कि बीड़ी उद्योग में आज जो 50 लाख लोग काम करते हैं, उनके contractors को तो चेक से पेमेंट होती है, लेकिन उनको तो मजदूर को ultimately कैश में ही पेमेंट करना होता है। ऐसी स्थिति में वह तो उसको मिलना नहीं है। ऐसे कितने ही सेक्टर्स होंगे।

[श्री प्रफुल्ल पटेल]

आज कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री की बात करते हैं, बहुत सारे लोगों ने कहा कि कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री में सब दो नंबर का काम होता है और इसी की वजह से ब्लैक मनी की बुनियाद है। चलिए ठीक है, इस बात को मान लिया, लेकिन उस कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज से जुड़े कई लोगों से मैंने बात की और आप और हम जानते हैं, मुम्बई में हम लोग बहुत सारे ऐसे लोगों को जानते हैं, उनका यह कहना है कि चलिए बोलते हैं न कि ब्लैक मनी कंस्ट्रक्शन में है या बिल्डिंग इंडस्ट्री में बहुत लगता है, लेकिन उस इंडस्ट्री को आज 80-80, 90-90 परमिशन भी तो लेनी पड़ती है और क्या एक भी परमिशन बिना पैसे के हो रही है? ...**(समय की घंटी)**... क्या आपने उसको ease of doing business में दुरुस्त किया? आपकी बात नहीं है, हमारे देश में बहुत सारी ऐसी बीमारियां पारंपरिक भी हैं, इसलिए अगर आप एकाएक सोचेंगे कि हम उसको "चट मंगनी, पट ब्याह" की तरह सब प्रॉब्लम्स को रातों-रात सॉल्व कर दें, ऐसा होने वाला नहीं है। ...**(व्यवधान)**... यह कोई legitimate नहीं है। इन सब प्रॉब्लम्स को सॉल्व करने के लिए इसमें हर आदमी को समावेश नहीं करना चाहिए था। मैं मानता हूँ कि काले धन के खिलाफ आप किसी भी तरह से मुहिम चलाइए, आप इससे भी बड़ी मुहिम चलाइए, उसमें कोई इश्यू नहीं है। अभी कई लोगों ने political funding की बात की। बहन जी ने भी बात कही। आज political funding के बारे में हम और आप सब जानते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद पवार (महाराष्ट्र): वे नहीं जानते हैं।

श्री प्रफुल्ल पटेल: अच्छा, आप नहीं जानते हैं, हम लोग जानते हैं कि प्रॉब्लम क्या है? इसी तरह से चुनाव में क्या हो रहा है, हम सब लोग इसे समझते हैं। आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं कि प्रॉब्लम क्या है? आप तो पार्टी के ट्रेज़रर भी हैं। उसमें परेशानी सबको हो रही है। इसमें आपको सुधार करना होगा। आज कालेधन और पोलिटिकल फंडिंग के कारण लोगों को जो परेशानी हो रही है, उसे भी आप अच्छी तरह जानते हैं लेकिन अंजान बनने की कोशिश करते हैं।

आप अभी बोल रहे थे कि बैंकों से सबको पैसे मिल रहे हैं। मैं आपको यहां एक किस्सा बताना चाहता हूँ। हमारे यहां पूना में एक डी.सी. बैंक है, डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक है। उसका व्यवहार आपने बिल्कुल बंद कर दिया है, टोटल बंद कर दिया है। You cannot draw even a single paisa. And, I am telling you. महाराष्ट्र हो या उत्तर प्रदेश हो, सब जगह, पूरे इंडिया में, वहां जितने खाते होंगे, उनमें से 50 परसेंट सैन्ट्रल में होंगे, उनमें फार्मल बैंकिंग सिस्टम नहीं होता है लेकिन आपने उनको टोटली बंद कर दिया है।

आप देखें कि पंजाब में कितने कोऑपरेटिव बैंक है। उनका आप क्या करेंगे? इसलिए मेहरबानी करके उनके लिए बहुत सारी चीजें स्वीकार करने की जरूरत है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि आपका उद्देश्य गलत है, लेकिन आज लोगों को जिस तरह की परेशानी हो रही है, उसके लिए कोई न कोई रास्ता तुरंत निकालने की जरूरत है।

अगर आप किसी से कहो कि तुम 50 दिन कम से कम भूखे रहो, 51वें दिन हम आपको भोजन देंगे, 50 दिन तक भूखा रहकर तो वह मर जाएगा। इक्यावनवें दिन आपका भोजन लेने के लिए वह जिन्दा रहने वाला नहीं है, इसलिए आज जिस तरह की परिस्थितियां हैं, उनका कहीं न कहीं समाधान करना होगा। किसी न किसी स्तर पर हमें उनका सामना करना पड़ेगा।

इसी तरह से नोटों की बात भी है। अभी कल आपके इकोनॉमिक अफेयर्स सेक्रेटरी का क्या आफीशियल बयान आया। उन्होंने कह दिया कि जिन नोटों का रंग निकलता है, वह सही नोट है ...*(व्यवधान)*... यदि किसी नोट का रंग निकले तो वह असली नोट है। मेघवाल साहब, आप जरा इसे देखिए। आपके शक्तिकांत दास का यह आफीशियल बयान है। I have got it. I have seen it. It is in the newspapers. मतलब, अगर जंग लगेगा तो आपके दो हजार रुपए के नोट को पकड़ेगा कौन? I cannot understand. नोट लेकर बारिश में मत जाओ। I am willing to validate it. How can you expect the Economic Affairs Secretary to say something like this? I am telling you something that I can validate. I am not telling something in the air. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, I am just concluding. I am only requesting you कि इस प्रकार की चीजें आप न करें। मेरी आपसे केवल यही रिक्वेस्ट है कि जो भी आपने कहा, उसमें कुछ संशोधन करके लोगों को राहत देनी चाहिए। इस बारे में आप लोगों को ज्यादा से ज्यादा सोचने की जरूरत है; वरना आज जो परिस्थिति पैदा हो गई है, उसके कारण उस सामान्य आदमी को आज बहुत परेशानी है, जो आपको सबसे ज्यादा मानता है, वही आज सबसे ज्यादा चिन्तित है। मैं चाहता हूं कि इस पर आप ध्यान दीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you, Mr. Praful Patel. Now, Shri Naresh Gujral.

SHRI NARESH GUJRAL (Punjab): Mr. Vice-chairman, Sir, I welcome this historic decision taken by the Government. And, I want to point out that in the run up to the 2014 General Elections, the Prime Minister had promised transformational change in the economy. The people of believed him, believed in the NDA, and that is how we came to power with a thumping majority. And, it is this change that is now being ushered in step by step. Whether it was the auction of the coal mines or spectrum, which was done in a transparent manner; or, it is the GST now, which will change the face of our economy; or, now, eliminating the black money, which is linked to corruption, through this step, I think, the people of India have welcomed these measures. Sir, we must understand the genesis of the problem. How was so much black money created in the country? I go back to the time of Mr. Nehru. Many of my friends sitting across would recall that there was an allegation that Mr. K.D. Malviya had taken ₹ 5,000/- for elections and he had to resign. That was the kind of money which was then in the system. I remember that my late father was very close to the then Prime Minister, Mrs. Gandhi. When the '67 election was fought, the total money available at Mrs. Gandhi's command was ₹ 18 lakhs. Motilalji, you have run Congress Party's affairs, of the Treasury, thereafter. I tell you a very interesting thing. At that time, it was said that the syndicate had collected ₹ 80 lakhs and they would capture the votes through money power. This was the

[Shri Naresh Gujral]

kind of money that was then available in the system. Thereafter, as time passed on, Mrs. Gandhi was advised by some socialist friends that the way to end disparity in this country would be to raise income taxes and apply wealth tax. The marginal rate of income tax was then brought up to 90 per cent ; on top of that, there was a two per cent wealth tax, which meant that if you want even ₹ 3,00,000/- a year, you were in the 90 per cent category and you had to pay wealth tax on top of that. So, actually, you were paying something like 98 or 99 per cent of your income in taxes. That is when the generation of black money started. This has been witnessed all over the world. Whenever taxation rates are very high, black money is created. Even in some European countries, this phenomenon has been witnessed. Sir, black money and corruption are always linked. Moving on from Mrs. Gandhi's time or towards the end of our regime, one started hearing of some scams, whether it was the rag import scam or some defence deals which were then talked about, or the Russian wheat deals, which, then, were very much in the news. Black money started getting generated. It started this cancer which came in, which started affecting all organs of society. But the real impetus to this really came in the last 10,12 years when we saw the Commonwealth scam, the 2G scam, the coal scam, that is where huge bribes were paid, which are always in black. The generation started and the resultant bribes went into the real estate sector where the boom came and more black money got created. That, Sir, created a parallel economy which was creating havoc in the system. The Government has to correct this. Because, if you don't do it now, your future generations will suffer. Sir, this also started creating social tensions, ostentatious display of wealth. We are witnessing today how a wedding is taking place in the South. All this is creating a lot of tensions in society. As I said earlier, this black money has affected every organ, be it our politics — elections have become so expensive and it hurts everybody — or, be it media. Today, all of us are victims of the paid media. That is the biggest expense at election's time. So, obviously, the Prime Minister is duty-bound to correct it. Sir, this Government and the Prime Minister announced the river cleaning programme. This is also an extension of that. The river of the economy is being cleansed with this step. Sir, the money that is now going to be collected or which is now being deposited in the banks will be used to fund the farmers, small businessmen, startups, and all that section which is in need of bank finance.

Sir, I agree that this has caused a pain all around. My State is also suffering; everybody is suffering. But, Sir, I just want to give one or two examples. Even when a child is born, the mother goes through pain. But, then, after that pain comes the joy, the kind of joy that the child then brings to the family all around. When

a patient is very sick, the patient is given intravenous, which causes pain, but it is that intravenous injection which eventually cures the patient. This is what the Government is trying to do, and I am sure, our future generations will reap a lot of benefit from what the Government is doing.

Sir, as I said earlier, I empathize and my Party empathizes with those who have suffered. And I have a few suggestions for the Government. First of all, cooperative banks have now been barred from giving money. Sir, this is causing a huge problem to the farmer. My Chief Minister has written to the Prime Minister. Sardar Parkash Singh Badal has urged both the Finance Minister and the Prime Minister that please allow the farmer to go to the cooperative banks to change his money, and this must be done immediately. Second, Sir, the private hospitals are not being allowed to collect cash. Of course, the statement made by one of the Secretaries was that they can convert money, but it is very simple. You collect the PAN number of the patient or the person who is paying the money and let them deposit the money. Why should a patient suffer?

SHRI PRAFUL PATEL: But if you don't have the PAN number?

SHRI NARESH GUJRAL: Then how will you collect three-four lakhs in cash?
...(Interruptions)...

SHRI PRAFUL PATEL: But there would be many who would not have PAN number. Farmers in Punjab always ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please, Nareshji, you need not reply to him. You address the Chair, please. ...(Interruptions)...

SHRI NARESH GUJRAL: Sorry, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please.

SHRI NARESH GUJRAL: Sir, similarly, this is the marriage season all over the country. Sir, I have urged the Finance Minister before also, and I urge him again that any member of the family, that has a marriage in the family must be allowed to withdraw, at least, two lakhs of rupees because there are difficulties being faced and the Government must come to their aid.

Similarly, Mobile ATMs should be sent to remote villages so that farmers and the people living in remote areas do not suffer. Sir, one more thing I would like to mention which I hope the Finance Minister will pay attention to that there have been reports in the newspapers – and the Chartered Accounts have said this – that if you deposit any amount of money in the bank, as the law stands, you only have to pay 30 per cent tax, and there can be no penalties. The hon. Finance Minister

[Shri Naresh Gujral]

has said that there is two-hundred per cent penalty but the Chartered Accountants have given their opinion that as the law stands today – unless they come with a retrospective law in the next Budget – there is no such penalty. I hope that the Finance Minister would reply to this point. *...(Time-bell rings)...* Second, Sir, I have a suggestion. Today there are brokers, touts, fixers, who are fixing deals. They say, you give one crore, take jewellery worth seventy lakhs, take property worth seventy lakhs. Put an end to all this, and my suggestion is, like you had the Scheme where you said, pay 45 per cent tax and the balance is yours, now you make it 65 per cent tax and the balance goes to the person who deposits the money, but don't give them cash. Give them a three-year bond. So, you will have hundred per cent money. These fixers, touts and brokers will all be eliminated, and this way a lot of money will come to the system.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Nareshji, please conclude.

SHRI NARESH GUJRAL: I would take just one minute, Sir.

In the end, again, I would say that the problem is serious and I know that the pain will not go away in the next week or within ten days. So, whatever few suggestions I have made, I hope the Government would take them seriously and act upon them. Thank you very much, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you, Nareshji. Now, Mr. Prem Chand Gupta – not present; Mr. Joy Abraham – not present; Mr. Sanjiv Kumar – not present. Dr. Keshava Rao. Now, Mr. Finance Minister, is what he said right that if money is deposited in the banks, you would have to pay just 30 per cent tax?

SHRI ARUN JAITLEY: Sir, there is an existing law which would apply, the provisions under the existing law. I think what Mr. Gujral is referring to is when somebody declares it as a part of his current income and when current income is taxable at the rates provided in the Income Tax Act. But if the current income suddenly becomes 5,000 per cent of last year's income, will it be treated as current income or otherwise?

SHRI NARESH GUJRAL: But it can always become double of that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you. Now, Mr. Rao has been given the floor.

SHRI PREM CHAND GUPTA: Sir, if you want me to speak, I would do so. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): All right. Mr. Prem Chand Gupta.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने के लिए मुझे समय दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। श्रीमान जी, 8 नवम्बर को माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश के नाम संदेश दिया और लास्ट मिनट में कहा कि पांच सौ और एक हजार रुपए के नोट का demonetization किया जाता है और आज रात 12 बजे के बाद यह पेपर का टुकड़ा हो जाएगा। प्रधान मंत्री जी से इस प्रकार की स्टेटमेंट expect करना वाजिब नहीं लगता। एक legal document को, legal tender को यह कहना कि वह 12 बजे के बाद महज़ एक कागज़ का टुकड़ा हो जाएगा, उससे ज्यादा कुछ नहीं रहेगा — देश और दुनिया में कोई भी इस चीज़ को appreciate नहीं करेगा।

श्रीमान जी, terrorism, black money और mafias का जो पैसा है, उसके ऊपर लगाम लगाने के लिए सरकार कोई भी कदम उठाती है तो उसमें किसी को कोई objection नहीं है। आपने देखा होगा कि हाउस में सभी पार्टियों ने इस संबंध में सरकार को समर्थन देने का काम किया, लेकिन जिस प्रकार से इस फैसले को लागू किया गया है, उसमें दस महीने की मेहनत के बारे में बात की जा रही है कि दस महीने से प्लानिंग चल रही थी। मुझे समझ में नहीं आया कि वे कौन से planner थे, जिन्होंने यह प्लान किया और करोड़ों लोगों को सड़क पर त्राहिमाम् की स्थिति में छोड़ दिया। आज लोगों की क्या स्थिति है, उनकी क्या दुर्दशा है कि आज वे केवल चार-साढ़े चार हजार रुपए बैंक से exchange कर सकते हैं। हमारे साथी पीयूष गोयल साहब ने कहा कि साढ़े चार हजार रुपए रोज़ निकाल सकते हैं। वह मज़दूर, जिसे 6-7 हजार रुपए, दस हजार रुपए महीने में मिलते हैं, वह लाइन में लगेगा या रोज़ पैसा निकालेगा? उसे अपने बच्चों का पालन-पोषण करना है, अपने परिवार का पालन करना है। वह रोज़ लाइन में खड़ा होगा — उसे रोज़ पैसा मिलेगा नहीं, हफ्ते में एक बार मिलेगा। ...*(व्यवधान)*...

श्री पीयूष गोयल: अगर 6,000 कमाता है तो साढ़े चार हजार रोज़ कैसे निकालेगा?

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: कोई हफ्ते में 6,000 रुपए कमाता है तो वह कैसे निकालेगा, आप यह तो बताइए?

श्री पीयूष गोयल: जो 6,000 रुपए कमाता है, वह बैंक में ...*(व्यवधान)*...

श्रीमती विप्लव ठाकुर: क्या बात कर रहे हैं? ...*(व्यवधान)*...

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: आप क्या बात कर रहे हैं? आप एक समृद्ध परिवार से आते हैं। आप अपनी स्थिति के अनुसार सोच रहे हैं। आप उस आदमी की स्थिति के बारे में सोचिए जिसे रोज़ मेहनत करके अपने परिवार का पालन करना होता है। श्रीमान् जी, आज स्थिति यह है कि किसान के पास बीज के लिए पैसा नहीं है, किसान के पास फर्टिलाइजर खरीदने के लिए पैसा नहीं है। हमारे यहां चार हजार ट्रक पूरे देश में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और वेस्टर्न सेक्टर गुजरात से गुवाहाटी, असम आगे तक उनकी क्या स्थिति है? वे फ्रूट्स, वेजिटेबल्स carry कर रहे हैं। जैसा कि हमारे साथियों ने कहा है कि कोई फिश लेकर जा रहा है, कोई मीट लेकर जा रहे हैं। कोई कुछ लेकर जा रहा है, कोई perishable चीज़ें लेकर जा रहा है, उनकी क्या स्थिति है?

[श्री प्रेम चन्द गुप्ता]

आपके कौन से प्लानर्स थे, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ? जब इसकी 10 महीने से प्लानिंग चल रही थी, तो आपके नये गवर्नर साहब ने 2000 रुपये के नोट पर दस्तखत कैसे किये? अगर 10 महीने से प्लानिंग चल रही थी, जो उज्जित पटेल साहब, जो रिजर्व बैंक के गवर्नर हैं, उन्होंने कैसे दस्तखत किये? आपके सेक्रेटरी, इकोनॉमिक अफेयर्स बोलते हैं कि अगर पानी लगाकर नोट का रंग उतर जाता है, तो इसका मतलब है कि वह असली नोट है। आप देश को किस स्थिति में लेकर जाना चाहते हैं? आप लोग देश में chaos पैदा करने के अलावा और क्या काम कर रहे हैं?

श्रीमान् जी, केश इकोनॉमी और ब्लैक इकोनॉमी दो अलग-अलग चीजें हैं। जो केश इकोनॉमी है, जिसको महीने में 25 हजार रुपया, 20 हजार रुपया, 15 हजार रुपया, 10 हजार रुपया मिलता है, वह बैंक में जाता है और 10 हजार रुपया जमा कराता है और 10 हजार या 5 हजार रुपया निकाल कर ले आता है। वह फिर से बैंक में जाता है और रुपया निकाल कर ले आता है। इस तरह से आपने पूरे देश को त्राहिमान कर दिया है। मैं बैंकों की स्थिति बता रहा हूँ। यहां पर माननीय रवि शंकर प्रसाद बैठे हुए हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की जो मसौड़ी में ब्रांच है, पटना के बराबर में है, वहां पर एक पैसा जमा नहीं हो रहा है और एक पैसा विद्झों नहीं हो रहा है। आप एटीएम की बात कर रहे हैं और मैं स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की बात कर रहा हूँ। आपकी क्या प्लानिंग है? यह ठीक है कि प्रधान मंत्री जी ने एक स्टेप लिया। आप पूरे देश को और पूरी दुनिया को क्या इंप्रेशन दे रहे हैं? सभी लोग आपके इस काम के, इस मूव के अंगेस्ट हैं। यह आप देश के साथ एक बहुत बड़ा अहित कर रहे हो। आप देश का माहौल खराब मत करिए। अगर देश का माहौल खराब करेंगे, तो यहां पर जो इन्वेस्टमेंट आ रही है, इसके लिए प्रधान मंत्री जी देश-देश घूम रहे हैं, वहां पर वे इन्वेस्टमेंट की बात कर रहे हैं, एफडीआई की बात कर रहे हैं। ऐसा इंप्रेशन मत दीजिए कि इस देश में सारे चोर बैठे हैं, सब काला बाजारी बैठे हैं, हमारे सारे ऑफिसर्स करप्ट हैं, सब पोलिटिकल सिस्टम करप्ट है, आप यह इंप्रेशन मत दीजिए। अगर आप ऐसा इंप्रेशन देंगे, तो आप देश का अहित कर रहे हैं। जैसा कि प्रफुल्ल भाई ने बताया कि छोटे दुकानदार हैं, जो हफ्ते में फेरी मार्केट लगाते हैं, उन लोगों का क्या होगा? कश्मीर से जो फ्रूट आ रहा है, उसका कोई खरीदार नहीं है। बाजारों में सब्जियां सड़ रही हैं। ...**(समय की घंटी)**... आपने 2000 रुपये का नोट दे दिया और किसी को एक किलो दूध लाना है, तो वह बाकी पैसे कहां से लेकर आएगा? इस तरह आपकी प्लानिंग बहुत ही misconceived है, आपने गरीबों, किसानों का, छोटे व्यापारियों का कोई ध्यान नहीं रखा है। आपने उनका बड़ा अहित किया है। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ। आप तो बड़े चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, विद्वान हैं, आपने देश की अर्थ-व्यवस्था को चरमरा दिया है और अगर आप इसे immediately war-footing पर पॉलिटिकल सिस्टम से ऊपर उठकर नहीं देखेंगे, तो देश का बड़ा अहित हो जाएगा। आप inflation की बात छोड़िए, देश की अर्थ-व्यवस्था deflation में भी जा सकती है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: मान्यवर, जब व्यापार नहीं होगा, अर्थ-व्यवस्था में कुछ भी एक्टिविटी नहीं होगी तो आप कैसे सोच सकते हैं कि सरकार को रेवेन्यू मिलेगा, लोगों के हाथों में पैसा distribute होगा? फिर आप दूसरे लोगों को जो ब्लेम करते हैं, उसे बंद कीजिए। बिहार चुनाव में आपकी एक-एक मीटिंग में 10-10 करोड़ का खर्च हुआ, आप बताइए कि उसे आपने किस क्रेडिट कार्ड

से पे किया? महोदय, 2-2 हजार बसों लोगों को ढोकर ला रही हैं और उनका खाना चल रहा है। आप बताइए कि वह खर्च आपने किस क्रेडिट कार्ड से पे किया? श्रीमान, हमारा देश यूरोप या अमेरिका नहीं है। यहां पर जब बच्चा पैदा होता है, उस वक्त से माताएं व बहनें अपने बच्चे की पढ़ाई के लिए, शादी के लिए अपनी सामर्थ्य के हिसाब से 100-100 रुपए, 50-50 रुपए बचाती हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Guptaji, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि आप यह जो impression दे रहे हैं कि काले धन के लिए, naxalism के लिए या cross-border terrorism के लिए या नकली करेंसी के लिए आप लड़ाई लड़ रहे हैं ..(व्यवधान)..

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Guptaji, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: उसमें पूरा देश आपके साथ है, लेकिन आप जो सोच रहे हैं कि आम जनता को तकलीफ देकर कुछ कर लेते हैं, तो उसमें सफल नहीं होंगे। अगर आपको यह करना था, तो उसे हायर लेवल पर करते। आप को गरीब आदमी को मारने की क्या आवश्यकता थी? रवि शंकर प्रसाद जी, आज गांवों और interior की जो स्थिति है, मैं बता रहा हूं, आप चैक कर लीजिए। अभी मध्य प्रदेश के शहडोल में लोक सभा का उपचुनाव होना है ...(व्यवधान)...

DR. K. KESHAHA RAO: Sir, yesterday, in the all-Party meeting, it was decided, and the Leader of the Opposition was also there, that there would not be a time-limit at all, as far as this discussion was concerned. I had repeated it three times and the Minister concerned, the Parliamentary Affairs Minister, said that they would see to it that all the Members are allowed to express their views. ...(Interruptions)... Sir, this morning also, it was said ...(Interruptions)... three days' discussion. ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Kindly listen. ...(Interruptions)... One moment.

SHRI PREM CHAND GUPTA: Sir, I will be very brief.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): One minute. Dr. Rao, there has been time allotted to every party and every group. ...(Interruptions)... One moment. ...(Interruptions)... Please listen. Why don't you listen? The Chair is very gracious. For a Member, who was allotted 10 minutes, we gave 20 minutes. He has been allotted 8 minutes. Now, he has spoken for 12 minutes. So, the Chair is very gracious. Don't say that we are restricting. Please understand.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: सर, आप तो हमारी सोच के आदमी हैं। आप से उम्मीद है कि आप हमें बोलने का मौका देंगे।

श्रीमान जी, मैं कह रहा था कि गांवों और interior में जो स्थिति है, उससे आप लोग अपने नेताओं, अपनी पार्टी और माननीय प्रधान मंत्री जी को जरूर अवगत कराएं। सर, शहडोल में लोक सभा का उपचुनाव है। वहां के रहने वाले एक सज्जन, जो हमारे वकील भी हैं, उन्होंने

[श्री प्रेम चन्द गुप्ता]

मुझे बताया कि आपकी पार्टी के लोग वहां गए और नारे बाजी की। गांव वालों ने उनको बुलाया और बिठाया तथा उनकी पिटाई की। उनको मुर्गा बनाया और फिर उनसे ही उल्टे नारे लगवाए, यह सच्चाई है। रवि शंकर जी, मैं गलत नहीं बोल रहा हूं। It is a matter of fact. आप इसको चैक करवा लीजिए। मैं यह नहीं बोल रहा हूं कि यह कोई बहुत बड़ी एचीवमेंट मैं आपके सामने रख रहा हूं। मैं आपके सामने एक वस्तुस्थिति रख रहा हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Guptaji, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: देश में क्या हो रहा है, पूरे देश का किसान बहुत तकलीफ में है। अगर इसका तुरंत कुछ न कुछ समाधान नहीं किया गया, तो वह एक anarchy की स्थिति हो जाएगी और पूरे देश में दंगे-फसाद भी हो सकते हैं। इसके अलावा क्या कुछ हो सकता है, आप यह सोच लीजिए। आप ऐसा इंप्रेशन क्रिएट मत कीजिए कि जैसे आप ही काले धन के साथ लड़ाई करने के लिए पैदा हुए हैं। हम लोग भी इस मामले में बहुत ठीक हैं। श्रीमान जी, मैं इतना ही कहकर आपका धन्यवाद करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Thank you. Now, Shri Pramod Tiwari.

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश): मैं आज जब एक अत्यंत गंभीर विषय पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं, तो सबसे पहले मैं कांग्रेस के उस स्टैंड को दोहराना चाहता हूं, जो हमारे नेता ने कहा था और बाद में सभी लोगों ने कहा है कि यह सबसे बड़ा स्कैम है, सबसे बड़ा स्कैंडल हुआ है। जो एक पवित्र नाम लेकर काला धन समाप्त करने के लिए मुट्ठी भर अपने दोस्तों, अपने मित्रों, अपने शुभचिंतकों और अपने पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए भाजपा की सरकार ने इन पांच सौ और हजार के नोटों को बंद किया है। यह एक ऐसी स्थिति है, जो इन्होंने पैदा की है, इसलिए मैं जेपीसी की मांग को सबसे पहले रखता हूं और क्यों हो, उसके तथ्य मैं आपके बीच में रखता हूं। मैं एक बात कहना चाहता हूं, आज कैसे हालात पैदा कर दिए हैं? आज हालात ये पैदा कर दिए हैं कि मां-बाप के पास पांच सौ और हजार के नोट हैं, डॉक्टर पांच सौ के नोट नहीं ले रहा है और बच्चा उनकी आंखों के सामने मर रहा है। उसके बाद उस मां-बाप पर क्या गुजरती होगी, शायद हम यहां बैठे सभी लोग जानते हैं। आज हालात ये हैं कि जेब में पैसे हैं, लेकिन कोई लेने वाला नहीं है। भूख से लोग बिलबिला रहे हैं और पांच सौ, हजार के नोट चल नहीं रहे हैं। शायद उन लोगों को चिन्ता नहीं होगी, जिनके घर में ऐसा नहीं होगा, लेकिन जिन घरों में बेटियां होंगी, जो परिवार को मानते होंगे, उनकी क्या हालत होगी? मैं कल ही प्रतापगढ़ से लौटकर आया हूं और ऐसे कई मां-बाप को जानता हूं जिनके घर बारात आने वाली है, लेकिन वे नहीं जानते कि उनकी बेटियों के हाथ कैसे पीले होंगे। आप लोगों की बहुत हाय ले रहे हैं, आपको बहुत बद-दुआ लग रही है। मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि मैं पिछले सात-आठ दिनों में जिन शहरों में गया हूं, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, लखनऊ और तो छोड़िए, प्रधान मंत्री जी के क्षेत्र वाराणसी में चले जाइए, बैंकों के सामने, एटीएम के सामने लम्बी-लम्बी लाइनें लगी हैं। सुबह से शाम तक लोग लाइनों में खड़े हैं और जब वे खिड़की के पास पहुंचते हैं, तो अंदर से कह दिया जाता है कि पैसा खत्म हो गया, ये हालात हैं। गांवों में स्कूल बंद हैं। जब पूछते हैं कि क्या हुआ, लड़के सड़क पर क्यों खेल रहे हैं? तो बताया जाता है कि मास्टर साहब लाइन में

5.00 P.M.

लगे हैं। हालात ये हैं कि छोटे कारोबारी के सामने भुखमरी की नौबत आ गई है। वहां पर कोई प्लास्टिक के नोट नहीं चलते हैं। वह थोड़ा पैसा इकट्ठा करता है, थोड़ा माल लाता है और थोड़ा बेचता है। उसकी तो दिन भर भी दो हजार की बिक्री नहीं होती और आप तो एक आदमी के हाथ में दो हजार पकड़ा रहे हो। अगर वह 20-25 रुपए का कुछ खरीदेगा, तो वह अदा कहां से करेगा? आप व्यावहारिक होकर बात करिए। आज जो गांव की हालत है, मैं आपको वह बयान कर रहा हूं। जो दिहाड़ी मजदूर हैं, इस सरकार को उनके हालात नहीं मालूम होंगे, क्योंकि यह सरकार तो पूंजीपतियों की सरकार है, यह पूंजीपतियों का ख्याल रखती है। सबको हालात मालूम होंगे कि आज वह मजदूर, जो रोज गांव से आकर शहर में खड़ा होता था, आज उस मजदूर को दिन-भर की मजदूरी देने के लिए कोई नहीं आ रहा है। वह अगर मजदूर की मजदूरी दे भी दे तो सीमेंट कहां से लाए, ईंट कहां से लाए, काम कहां से कराए? हालात ये हैं कि मजदूरों के घरों में फाका पड़ रहा है। आज हालात यहां तक पहुंच गए हैं।

और तो छोड़ दीजिए, आपने जो कदम उठाए हैं, उससे बेरोजगारी भी बढ़ रही है। शहर में जो सबसे बुरी हालत हो रही है, वह यह है कि बहुत से लोगों के बच्चे शहरों में पढ़ रहे हैं, जो शहरों में पढ़ते हैं, वे सुबह, शाम होटल में कभी यहां खाना खाते हैं, कभी वहां खाना खाते हैं, उनके पास पांच सौ, हजार के नोट हैं, लेकिन इन बच्चों को कोई खाना खिलाने के लिए तैयार नहीं है, इन छात्रों को होटलों में खाना नहीं मिल रहा है। क्योंकि उनके पास कोई परिवार नहीं है, इसलिए उनको कोई सहारा भी नहीं है। सबसे बुरी हालत तो उनकी है। मैं आपको कल की एक कहानी सुना दूं। कल मैं एक कार्यक्रम में गया था, एक किसान, जो हमेशा "जय श्रीराम" बोलता था, क्योंकि वह भाजपा का बड़ा कट्टर समर्थक था, कल बड़ी जोर से आया, उससे तपाक से हाथ मिलाया। मंगल का दिन था, वह मंदिर से उतरकर आ रहा था, मैंने पूछा क्या हुआ, आज क्यों नहीं बोल रहे हो? वह बड़ा बूढ़ा था, कहने लगा भस्मासुर की कहानी सुनी है? हम किसानों ने ही शिव भगवान बनकर मोदी जी की सरकार बनवा दी थी, यह तो कलियुग का * है, जिन्होंने बनाया था, उन्हीं के सिर पर, किसानों के, मजदूरों के, नौजवानों के सिर पर हाथ रख रहा है। आज आपकी हालत भस्मासुर जैसी हो गई है। मेरे ख्याल से जिन्हें थोड़ी पौराणिक कहानी मालूम होगी, वे जानते हैं कि भस्मासुर का अंत कब होता है, मैं नहीं जानता, लेकिन आपने जो हालात पैदा कर दिए हैं, उनकी वजह से आप 2017, 2019 में अपने सिर पर हाथ रखकर नाचोगे और खुद भस्म हो जाओगे। आज आपकी यह पोजिशन बन गई है।

आप कहते हैं कि इससे तस्करी रुक जाएगी, ड्रग्स का कारोबार रुक जाएगा, लेकिन जिस सरकार में ड्रग्स का सबसे ज्यादा कारोबार हो रहा है, वहां तो आप सहयोगी हैं। आप रोक क्यों नहीं लेते? पंजाब में, मैं नाम ले रहा हूं, आंकड़े कहते हैं कि वहां सबसे ज्यादा ड्रग्स की तस्करी होती है। आप तो वहां लाल बत्ती जलाकर घूम रहे हैं, वहां आप कैसे ड्रग्स रोकेंगे? ड्रग्स लाने में तो आप सहायक हो। आप उस सरकार में सहायक हो, जहां सबसे ज्यादा ड्रग्स का प्रयोग होता है। वह तो आप कर नहीं पा रहे हैं, लेकिन आपने गरीब आदमी का जीना दुश्वार कर दिया है। आपने किया क्यों? मैं पूछता हूं, आपको जरूरत क्या पड़ी थी?

आपकी सरकार की जिंदगी के पांच साल थे, उसमें से ढाई साल बीत गए हैं, अब आपसे

*Expunged as ordered by the Chair.

[श्री प्रमोद तिवारी]

लोग पूछते हैं कि 15 लाख कहां हैं? आपके पास इसका जवाब नहीं है। आपसे लोग सवाल पूछते हैं, लेकिन आप हर मोर्चे पर असफल हो। प्रधान मंत्री जी 8 बजे आते हैं और 8 बजे कहते हैं कि थोड़ी देर बाद, 12 बजे के बाद 500 और 1,000 के नोट "शब्द" क्या इस्तेमाल किया, मुझे आपत्ति है, उन्होंने कहा कि ये रद्दी कागज के टुकड़े हो जाएंगे। 500 रुपये? कौन रद्दी का टुकड़ा हो जाएगा? जिस पर आपने लिखा है, "मैं धारक को", अगर वह 500 का नोट है, तो उस पर लिखा है कि "मैं धारक को 500 रुपये देने का", अगले शब्द पर गौर कीजिएगा, "वचन देता हूं।" यह किसका वचन है? यह भारत सरकार का वचन है, यह रिज़र्व बैंक का वचन है।

मगर आपने जो आचरण किया है, उससे भारत सरकार और चिट फंड कंपनी में फर्क क्या रह गया? चिट फंड कंपनियां भी तो यही करती हैं। वे वचन देती हैं कि तुम रुपये दो, हम 12 महीने में, 18 महीने में उनको दुगना कर देंगे और फिर 12, 18 महीने में एक दिन तंबू का खेमा उखाड़कर भाग जाती हैं। आपने तो भारत सरकार की हालत चिट फंड कंपनियों वाली कर दी है। यदि आपने कहीं चिट फंड वाली कंपनियों में ऐसा किया होता, तो अब तक आप पर मुकदमा दाखिल हो जाता। कायदे से, यदि भारत सरकार ईमानदार है, तो आपको अपने ऊपर मुकदमा दाखिल कराकर इसकी जांच करानी चाहिए कि आपने अपना वचन तोड़ा है।

आपने वह वचन कहां दिया था? आपने भारत को कहां वचन दिया था? वह एक लीगल प्रॉमिसरी नोट था। आपको अधिकार नहीं था। आपको अधिकार आरबीआई के रूल 26 (ए) (बी) से मिलता है। रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया का जो 26 रूल है, वह कहता है कि आप एक सीरीज़ को खत्म कर सकते हैं। आपने सीरीज़ खत्म नहीं की, आपने 86.4 परसेंट करेंसी को खत्म कर दिया। आपको यह अधिकार कहां से मिला? आपने यह * किसको दिया? आपने नाम तो काले धन का लिया, सच पूछिए तो आपने हिन्दुस्तान के 125 करोड़ लोगों को * दिया है, हिन्दुस्तान के 125 करोड़ लोगों के साथ * किया है। हम लोग जब विदेश जाते हैं, तो आपकी सरकार की तारीफ करके आते हैं, क्योंकि वह भारत की सरकार होती है, लेकिन मैं यह पहली बार देख रहा हूँ, अगर हिम्मत हो आप लोगों में, तो मेरी इस बात को कोई पहुंचा देना कि ऐसी परंपरा नहीं रही है, क्योंकि जब भारत के प्रधान मंत्री बाहर जाते हैं तो अपने देश का गुणगान करते हैं, अपने देश के महत्व को बताते हैं, लेकिन आप यहां ऐसा कदम उठा कर जाते हैं और वहां आप कहते हैं कि मैंने एक हाथ से काला धन, तस्करी, ये सब रोक दिया है। आपका वायदा इस भारत को सोने की चिड़िया बनाने का था, आपने इसको तस्करों का देश बना दिया, काले धन का देश बना दिया और वह भी विदेश की धरती पर बैठकर। आप भूल गए कि आप इलेक्शन मीटिंग में एड्रेस नहीं कर रहे हैं, बल्कि जापान में कहीं एक अंतर्राष्ट्रीय संबोधन कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि आपका यह आचरण निंदनीय है, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, आपने भारत माता का अपमान किया है। मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि तस्कर, काले धन का नाम लेकर आपको 125 करोड़ लोगों को अपमानित करने का अधिकार किसने दे दिया? मैं आपसे कहना चाहता हूँ, कारण बताना चाहता हूँ कि मैं आपसे क्यों ऐसा कह रहा हूँ। आप तो कह रहे हैं कि काले धन के लिए दस महीने से तैयारी कर रहे हैं, आप कर रहे थे, बड़े सिस्टमेटिक तरीके से कर रहे थे, पहले 30 हजार डॉलर ले जाने की आपने अनुमति दी थी, धीरे से चुपचाप बढ़ाया

*Expunged as ordered by the Chair.

और 75 हजार डॉलर कर दिया, फिर बढ़ा कर 1 लाख 25 हजार डॉलर कर दिया, फिर 2 लाख 30 हजार डॉलर कर दिया और फिर अपने दोस्तों-यारों के माध्यम से भेज दिया। वायदा तो था कि काला धन वापस लाएंगे, लेकिन आपने हिन्दुस्तान का धन विदेश भेज दिया। यह आपकी सरकार के बनाए हुए नियम हैं, मैं उन नियमों का उल्लेख करता हूँ और इसलिए मैं कहता हूँ कि इसकी जांच होनी चाहिए। मैं बिल्कुल विजय माल्या की आपकी दुखती रग पर हाथ नहीं रखूंगा, मैं ललित मोदी का नाम भी नहीं लूंगा, लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि एक लाख करोड़ रुपए पिछले तीन महीने में जमा हुए हैं और आपके प्रिय राज्यों में जमा हुए हैं। जहां आपकी सरकारें हैं, वहां ज्यादा जमा हुआ है। यह प्रमोद तिवारी नहीं कह रहा है, यह स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के आंकड़े कह रहे हैं। सामान्यतया जहां पचास हजार करोड़ रुपए जमा होते थे, पिछले चार-पांच महीने में वहां एक लाख करोड़ रुपए जमा हुए हैं, यानी चालीस-पचास हजार करोड़ रुपए पिछले तीन-चार महीने में आपने खपा दिए। जहां पर भाजपा सरकारें हैं, वहां पर आपका आचरण यह रहा है। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ, आपने काले धन को जिस तरह से खपाया है और उसके बाद जिस हालात में ऐसा किया है, वह सामने है। मैं तो आपकी सरकार को बहुत ज्ञानी-ध्यानी समझता था, मेरी गलतफहमी थी, मैं अक्सर गलतफहमी में आ जाता हूँ। आप पर देश ने भरोसा कर लिया था कि अगर देश पर दुश्मन का हमला होगा, तो आप संभाल लेंगे। मैं आपके माध्यम से पूरे सदन से एक सवाल पूछता हूँ, प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि आप चिन्ता मत करो, आप जाना, अगर आपके पास सफेद धन है तो आपको चार हजार रुपए मिल जाएंगे। कौन सा चार हजार मिलेगा? अभी तो आपको मालूम ही नहीं था कि चार लाख एटीएम मशीन से दो हजार रुपए का नोट निकालने वाला इंस्ट्रूमेंट ही नहीं लगा था। वहां आदमी जा ही नहीं सकता था, रुपया निकल ही नहीं सकता था, क्या यही तैयारी थी? भारत के प्रधान मंत्री ने ऐसा बोला। क्या उन्हें नहीं बताया गया था कि अभी तो आपके एटीएम तैयार ही नहीं हैं? दूसरे दिन बेचारे जेटली साहब कुछ थोड़ी-बहुत सफाई देने में उतरे। उन्होंने कहा कि हां, हां, उसमें उसे लगाने में हमें तीन से चार हफ्ते लग सकते हैं। फिर उसके बाद प्रधान मंत्री जी बोले कि आप हमें पचास दिन दे दो, हम पचास दिन में आपके सपनों का भारत बनाएंगे। इन पचास दिनों में क्या होगा? आपको मालूम है। खरीफ की फसल तैयार हो गई, किसान के घर में धान आ चुका है, खलिहान से निकल चुका है। इन पचास दिनों में सात सौ, आठ सौ, नौ सौ रुपए में कोई खरीदार नहीं मिल रहा। आप यह बारह सौ, चौदह सौ छोड़िए, ... सर, घंटी मत बजाइएगा, मैं इस समय लय में हूँ। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि धान को खरीदने वाला कोई नहीं मिल रहा है, किसान लुट रहा है, उसको हर क्विंटल पर चार सौ, पांच सौ रुपए का घाटा हो रहा है और शायद आपको मालूम नहीं होगा, यह खेती करने वाले लोग उधर नहीं बैठे हैं, मैं किसान हूँ, आपको बता रहा हूँ कि उत्तर प्रदेश में रबी की फसल में दो फसलें होती हैं, मुख्यतया गेहूं और आलू। आज किसान गेहूं का उन्नतशील बीज खरीदता है, लेकिन नहीं मिल रहा है। वह कहाँ से खरीदे? आलू कोल्ड स्टोरेज से निकलता है, उसे वह बीज के रूप में खरीदता है, फिर उसके बाद बोता है। वह कहाँ से खरीदे? शायद इनको यह नहीं मालूम होगा कि अगर प्रधान मंत्री जी के वचन पर 50 दिन चला जाए, * तो वह 50 दिन बाद जब आलू बोएगा, तो दिसंबर-जनवरी में टेम्परेचर इतना ठंडा हो चुका होगा कि वह आलू जमेगा नहीं, अंकुरित नहीं होगा। लुट गई रबी की फसल, लुट गई खरीफ की फसल। प्रधान मंत्री जी, आपने किसान को जीते जी मार डाला है। वह किसान, जो

*Expunged as ordered by the Chair.

[श्री प्रमोद तिवारी]

अन्नदाता है, जो धरती का भगवान है, आपने उसको भिखारी बना दिया है। इस देश का किसान आपको कभी माफ करने वाला नहीं है। आपने यह भी कह दिया, जो मन किया, आप कहते चले गए, पर मैं आपसे एक चीज कहना चाहता हूँ कि आपने 125 करोड़ लोगों का विश्वास तोड़ा है। हम सब कहते थे, आप उस कुर्सी पर बैठते हैं, जिस पर कभी पंडित जवाहरलाल नेहरू बैठते थे, शास्त्री जी बैठते थे, इंदिरा जी बैठती थीं, चौधरी चरण सिंह बैठते थे, अटल बिहारी वाजपेयी बैठते थे, लेकिन आज मालूम है कि आप किस लाइन में खड़े हो गए हैं। पिछले कई सालों में किसी सम्य देश ने, किसी विकसित देश ने यह demonetization नहीं किया। किया किसने है? अब आप उसी लाइन में चलिए, जरा ध्यान से सुनिएगा। किया था कर्नल गद्दाफी ने, तानाशाह था। दूसरा किसने किया था? मुसोलिनी ने, तानाशाह था। तीसरा हिटलर ने भी किया था। अगर चौथा नाम लिया जाएगा, तो हम तो आपको बैठाते थे पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी के साथ, आप जाकर बैठ गए * आज चौथा नाम किसका लिया जाएगा? जब कहीं लिखा जाएगा कि किन-किन लोगों ने किया, तो उनमें चौथा नाम होगा हमारे *। आपने ढाई साल में कहां से कहां पहुँचा दिया! मैं आपसे कहना चाहता हूँ ...(समय की घंटी)... मैंने अभी बस शुरू किया है, खत्म करने में थोड़ा टाइम लगेगा। मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Pramodji, how much time you need?

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, I will take time. I request you. I plead with you. I again request you to give me some time. Please.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): You are making very valid points. But please listen. There are six more speakers from your Party.

SHRI PRAMOD TIWARI: I will not take more than twenty minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Already fifteen minutes are over.

श्री प्रमोद तिवारी: सर, मेरे कुछ सवाल हैं। I have some questions to ask. Please. आप कहते हैं कि एटीएम से ढाई हजार निकलेगा। आप बड़े भारी बादशाह हैं, आप कहते हैं कि एटीएम में जाइए, ढाई हजार मिल जाएगा। आप कहते हैं कि एक्सचेंज में जाओ, 4,500 मिल जाएगा, बैंक में जाओ, 24 हजार तक मिल जाएगा। यह कौन सा पैसा है? आप कोई खैरात में हमें दे रहे हैं! यह हमारी मेहनत की कमाई का पैसा है। उससे ज्यादा आप कैसे रोक सकते हो, हमें बताओ। वह पैसा, जो हमने बैंक में रखा है। ...(व्यवधान)...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Sir, I have a point of order under Rule 238.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): One minute please. There is a point of order.

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: उपसभाध्यक्ष जी, ऑनरेबल प्रमोद तिवारी जी ने बहुत विस्तार से अपनी बात कही। ऑनरेबल प्रमोद तिवारी जी ने यह बात बार-बार कही कि प्रधान मंत्री जी ने

*Expunged as ordered by the Chair.

यह कहा कि जो 500 और 1,000 के नोट हैं, वे रद्दी के टुकड़े हो गए। मैं प्रमोद तिवारी जी की जानकारी के लिए और देश की जानकारी के लिए केवल इतना बताना चाहता हूँ कि प्रधान मंत्री जी ने जिस दिन अपना भाषण किया है और इस सम्बन्ध में देश को जानकारी दी है, उसमें उन्होंने जो शब्द कहे हैं, उस शब्द को मैं दोहराना चाहता हूँ। "भाइयो और बहनों, देश को भ्रष्टाचार और काले धन रूपी दीमक से मुक्त कराने के लिए एक सख्त कदम उठाना जरूरी हो गया है। आज मध्य रात्रि, 8 नवंबर, 2016 को रात्रि 12 बजे से वर्तमान में जारी 500 और 1,000 रुपए के करेंसी नोट लीगल टेंडर नहीं रहेंगे, यानी ये मुद्राएँ कानूनन अमान्य होंगी। 500 और 1,000 रुपए के पुराने नोटों के जरिए लेन-देन की व्यवस्था आज मध्य रात्रि से उपलब्ध नहीं होगी। भ्रष्टाचार और काले धन और जाली नोट के कारोबार में लिप्त देश विरोधी ...(व्यवधान)... और समाज विरोधी तत्वों के पास मौजूद 500 और 1,000 रुपए के पुराने नोट अब केवल..."...(व्यवधान)... यह काला बाजारियों के लिए कहा है कि जो काला बाजारिए हैं, जो भ्रष्टाचारी हैं ...(व्यवधान)... जो काले धन के माध्यम से गरीबों के हक पर डाका डाल रहे हैं, उनके पास जो नोट हैं, वे रद्दी का टुकड़ा हो जाएंगे।...(व्यवधान)... इसमें किसको आपत्ति हो सकती है? ...(व्यवधान)...

श्री नरेश अग्रवाल: इसमें point of order की क्या बात है?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please sit down. ...(Interruptions)...

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: सर, इसमें किसको आपत्ति हो सकती है? ...(व्यवधान)... जो काला बाजारिए हैं, जो बेईमान हैं, जो भ्रष्टाचारी हैं, उनके पास जो पैसा है, वह कागज का टुकड़ा हो जाएगा। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. ...(Interruptions)... Please. ...(Interruptions)...

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: जो ईमानदार लोग हैं, जो आम जनता है, जो गरीब लोग हैं, जो कमजोर तबका है, उनका जो पैसा है, वह सुरक्षित है। ...(व्यवधान)... उनकी पूरी सुरक्षा की जाएगी। ...(व्यवधान)... प्रधान मंत्री जी ने यह बात कही है, इसलिए "कागज के टुकड़े" का जो शब्द है, उसको डिलीट किया जाए। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. ...(Interruptions)... It will be looked into. ...(Interruptions)... We will go through the record and the Chair will look into it.(Interruptions)...

श्री प्रमोद तिवारी: मैं सिर्फ एक बात कह दूँ, point of order का एक्सपर्ट तो मैं हूँ, ये कब से इसके एक्सपर्ट हो गए? ...(व्यवधान)... It was a matter of explanation. जब आप बोलते, तब आप स्पष्ट कर देते।...(व्यवधान)... इसमें point of order कहां से आ गया? ...(व्यवधान)... सुनिए, दूध का दूध, पानी का पानी भी सुनिए।...(व्यवधान)... प्रधान मंत्री जी ने जो बोला, शायद आपने ठीक से सुना नहीं। जब से नजमा जी रिटायर हुई, आप जरा कम खयाल रखते हैं। ...(व्यवधान)... आप खयाल रखिए, नहीं तो फिर वहीं पहुंच जाएंगे। ...(व्यवधान)... सुनिए, उसको छोड़िये। ...(व्यवधान)... रखिए, रखिए। ...(व्यवधान)... उनको जब कभी आप ध्यान से सुनिएगा, उन्होंने जापान में क्या कहा, गाजीपुर में क्या कहा, गोवा में क्या कहा और यहां क्या कहा, जब सब मिलाकर पूछेंगे ...(व्यवधान)...

श्री भूपेंद्र यादव (राजस्थान): आप सदन को मिसलीड नहीं कर सकते। ...*(व्यवधान)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: I am not yielding. ...*(Interruptions)*... I am not yielding. ...*(Interruptions)*... I am not yielding for him. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): No, no. ...*(Interruptions)*... Mr. Naqvi, has raised a point of order. ...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): They are misleading the country. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): The Chair will go into the record. ...*(Interruptions)*...

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, it is a. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रमोद तिवारी: मैं इन्सिस्ट करता हूँ, जो मैं बोला हूँ, मैं उसको दोहराता हूँ कि प्रधान मंत्री ने यह कहा था कि ये 500 और 1000 रुपये के नोट सिर्फ कागज के टुकड़े रह जाएंगे। ...*(व्यवधान)*... मैं अपने शब्दों को दोहराता हूँ। ...*(व्यवधान)*... दृढ़ता से दोहराता हूँ। ...*(व्यवधान)*... प्रधान मंत्री ने देश को * दिया। प्रधान मंत्री ने देश के साथ * किया।

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: बेईमानों और भ्रष्टाचारियों के लिए ये कागज के टुकड़े हैं। ...*(व्यवधान)*... ईमानदारों के लिए, किसानों के लिए, मजदूरों के लिए ये कागज के टुकड़े नहीं हैं। ...*(व्यवधान)*... बेईमानों और भ्रष्टाचारियों के लिए, घोटालेबाजों के लिए ये कागज के टुकड़े हैं। ...*(व्यवधान)*...

श्री प्रमोद तिवारी: प्रधान मंत्री का, सरकार का, एक चिट फंड कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में ...*(व्यवधान)*...

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: चोट कहीं लगी है, आपका निशाना कहीं और है। ...*(व्यवधान)*... आप ऐसी बात क्यों कर रहे हैं ...*(व्यवधान)*...?

श्री नीरज शेखर: आप बैठिए, बैठिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नकवी: आप जरा कम बोलेंगे, तो अच्छा रहेगा।...*(व्यवधान)*...

श्री नीरज शेखर: आप मुझे धमकी मत दीजिए।...*(व्यवधान)*...

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: I never interrupt. ...*(Interruptions)*... He is a senior Member. ...*(Interruptions)*... But comparing our....*(Interruptions)*...

श्री नीरज शेखर: इनके कहने का क्या मतलब है कि यह अच्छा रहेगा या नहीं रहेगा। ...*(व्यवधान)*... ये मुझे धमकी दे रहे हैं?...*(व्यवधान)*... मंत्री जी क्या कर लेंगे?

*Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. *...(Interruptions)...*
Please. *...(Interruptions)...* Please resume. *...(Interruptions)...*

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: I never interrupt. *...(Interruptions)...* I never interrupt but comparing * to say the least. *...(Interruptions)...* It should not go on record, Sir. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): No, no. *...(Interruptions)...*
Please. *...(Interruptions)...*

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: It should not go on record. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. *...(Interruptions)...*
Please. *...(Interruptions)...* We will go into the record. *...(Interruptions)...* If there is something derogatory, that will be *...(Interruptions)...*

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: He should withdraw it. *...(Interruptions)...*
This is very, very unfair and unparliamentary also. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): We will go into the record and if there is anything derogatory, it will be.....*...(Interruptions)...*

श्री प्रमोद तिवारी: रवि शंकर जी ने जो कुछ भी कहा, मैं अपनी बात फिर से दोहराते हुए कहना चाहता हूँ कि किसी सभ्य देश ने, किसी विकसित देश ने यह नहीं किया था। जिन लोगों ने यह किया था, मैंने इतिहास के उन व्यक्तियों के नाम पढ़ दिए हैं, उनमें एक थे कर्नल गद्दाफी, उनसे क्या आपको एतराज़ है?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please conclude in one minute. *...(Interruptions)...* Bhupenderji, please sit down. *...(Interruptions)...*

श्री प्रमोद तिवारी: नहीं सर, यह जो डिस्टर्बेंस हुआ *...(व्यवधान)...* यह जो डिस्टर्बेंस हुआ *...(व्यवधान)...* अरे भैया, बैठ जाओ। *...(व्यवधान)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Stop the Interruptions. *...(Interruptions)...* It will take more time. *...(Interruptions)...*

श्री प्रमोद तिवारी: मैं समझ रहा हूँ कि मेरी बात से कुछ नमक मिर्च लग रही है, तो आपका उत्तेजित होना स्वाभाविक है। I am concluding in two-three minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: But you said, twenty minutes. *...(Interruptions)...*

*Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Already, twenty-one minutes over. ...*(Interruptions)*... Mr. Jairam Ramesh, twenty-one minutes are over. ...*(Interruptions)*... He wants another twenty minutes. ...*(Interruptions)*... What is this? ...*(Interruptions)*... He cannot be taking the whole of their time. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Hon. Vice-Chairman, Sir, you are presiding here.

मैं आपसे सिर्फ एक विनती करता हूँ। मैंने जो कहा है, उसको फिर दोहराता हूँ। ...*(व्यवधान)*.. जब इतिहास की तुलना बड़े लोगों से की जाती है, तो उनके सत्कार्यों से की जाती है। किसी सम्य और विकसित राष्ट्र ने यह कार्य नहीं किया। 124 साल पहले अमरीका ने यह काम किया था, लेकिन उसके बाद दोबारा नहीं किया। सिर्फ तीन लोगों ने इस काम को किया था और उन तीनों के नाम हैं, कर्नल गद्दाफी, मुसोलिनी, हिटलर और चौथा नाम है, *।

श्री चुनीभाई कानजीभाई गोहेल (गुजरात): आप यह क्या बात कर रहे हैं? ...*(व्यवधान)*... आप ऐसी बात नहीं कर सकते हैं। ...*(व्यवधान)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): Please. ...*(Interruptions)*... Thakurji, please. ...*(Interruptions)*... You please sit down. ...*(Interruptions)*... No, no. ...*(Interruptions)*... He is not saying anything. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI CHUNIBHAI KANJIBHAI GOHEL: Why is he repeating it? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TIRUCHI SIVA): He is quoting history. ...*(Interruptions)*... That is all. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... He is clarifying what he has told earlier. ...*(Interruptions)*... Please. ...*(Interruptions)*... See, he can take care of himself. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down when the Chair is saying. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रदीप टम्टा (उत्तराखण्ड): मेरा कहना है कि आप इतिहास से कुछ सीखो, नहीं तो इतिहास बन जाओगे। ...*(व्यवधान)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, I am a very good student of history, that is why I was repeating this. मैं फिर से दोहरा दूँ, हिटलर, मुसोलिनी ...*(व्यवधान)*...

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Pramodji, how many more minutes do you want?

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, you are a very kind person. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, only three-four minutes.

*Expunged as ordered by the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have eight speakers. Please stop. *...(Interruptions)...*

SHRI PRAMOD TIWARI: Sir, you tell me how many minutes I have.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You can take two more minutes. That is all. *...(Interruptions)...* Only two minutes; nothing more.

श्री प्रमोद तिवारी: सर, अब चूंकि दो मिनट हैं और आप मानेंगे नहीं, इसलिए मैं कनक्लूड करता हूं। मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि आपने यह किया क्यों है, काला धन वापस जाए, रुके, यह इरादा आपका नहीं है, क्योंकि काले धन से, जिस दिन से आपकी पैदाइश हुई थी, पुरानी पार्टी से आपका नया नाता नहीं है, बल्कि बहुत पुराना नाता है। एकमात्र राष्ट्रीय अध्यक्ष है, जो टीवी पर नोट गिनते पाया गया, तो वह आपकी शानदार पार्टी का है, किसी दूसरी पार्टी का नहीं। आप ही की पार्टी के लोग हैं, जो नंबर दो का पैसा ले रहे थे, तो कह रहे थे कि पैसा भगवान से कम नहीं होता, खुदा से कम नहीं होता। यह आप ही की पार्टी के अध्यक्ष ने कहा था। आपका तो काले धन से बड़ा पुराना रिश्ता है।

महोदय, मैं एक बात कहूंगा कि इन्होंने 500 और 1000 रुपए के नोट इसलिए हटाए हैं, ताकि गरीब मरे, किसान मरे, लोग परेशान हों, लेकिन उससे भी ज्यादा यह काम इसलिए इन्होंने किया है कि जो इनके मित्रों का एनपीए हुआ है, जो कर्जों का ब्याज इन्होंने अपने मित्रों का माफ किया है, वह एक लाख दस हजार करोड़ रुपए का है और मॉनेटाइजेशन से जो पैसा आएगा, उससे आप अपने एनपीए करने वाले दोस्तों को फिर कर्जा देने के लिए इकट्ठा कर रहे हैं, जिससे काला धन उनके पास जाए, जिन उद्योगपतियों का एकाउंट एनपीए डिक्लेयर हो गया है। आपकी नीयत देश को सुधारने की नहीं है। देश तो उसी दिन सुधर जाएगा, जिस दिन आप सुधर जाएंगे, क्योंकि देश में जितनी भी गड़बड़ियां हैं, वे सब आपकी वजह से हैं। आप सुधर जाएं, देश अपने आप सुधर जाएगा।

महोदय, मैं एक मित्रवत् सलाह देकर अपनी बात खत्म करूंगा। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि बहुत से आरोप लगे, वहां विधान सभा में भी कल लग गया है, तमाम अखबारों में लग रहा है और वॉट्सऐप पर जो मैसेज आ रहे हैं, वे सुनने लायक नहीं हैं। उन्हें मत सुनिए, वॉट्सऐप बन्द रखिए, क्योंकि ऐसी-ऐसी गालियां लोग दे रहे हैं कि मुझे बुरा लग रहा है, आपको कितना बुरा लगता होगा। आप सोचिए, आपकी तो नौकरी भी उन्हीं से चल रही है। क्या-क्या लोग कह रहे हैं। मैं आपसे एक बात कह कर अपनी बात खत्म करूंगा। एक ही रास्ता है कि सच्चाई सामने आ जाए, इसके लिए आप एक जेपीसी बना दीजिए। जेपीसी सारे आरोपों की जांच कर ले, जिससे सच्चाई सामने आ जाएगी। मैं इतना कहूंगा, काला धन आप समाप्त नहीं करना चाहते, बल्कि उन मित्रों को उपकृत करना चाहते हैं, जिनके सहारे आप सत्ता में चुनकर आए हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri Venkaiah Naidu.

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT, THE MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION AND THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Mr. Deputy Chairman, Sir, the entire country is eagerly watching what is happening and who is saying what.

[Shri M. Venkaiah Naidu]

उन्हें किसी के कटाक्ष को सुनने में रुचि नहीं है कि यह कौन है, वह कौन है, किसने इमर्जेंसी लगाई, किसने विपक्ष को जेल में डाला, किसने प्रेस पर सेंसरशिप लगाई, किस ने जेपी को जेल में डाला, किसने देश के लाखों लोगों के फंडामेंटल राइट्स को खत्म कर दिया, किसने जेपी को जेल में डालकर संविधान में संशोधन कराया, किसने पार्लियामेंट के पांच वर्षों के कार्यकाल को छः साल कराया। यदि ऐसा मौका आएगा, तो आप भी अपने कार्यकाल को 10 या 15 साल करा सकते हैं। ऐसा करने वाले कौन हैं, उसमें भी लोगों की रुचि नहीं है। इसका कारण क्या है, क्योंकि आप बहुत पुरानी बातों को कह रहे हैं गद्दाफी वगैरह, ये कट ऑफ हो गए हैं, ये बहुत पुराने हो गए हैं। उनके बारे में चिन्ता करने का विषय नहीं है। विषय है — लोग जानना चाहते हैं, जो महायज्ञ The great transformation the Prime Minister is trying to bring in this country; who are supporting the transformation, who are opposing the transformation, is the main issue. That is the benchmark. I expected people from the other side, all learned friends are there because they have more experience all these years, 50 years plus हम 50 दिन कह रहे हैं, आप उसे सहन करने के लिए तैयार नहीं हैं, मगर 50 साल हमने आप लोगों को झेला है, देश ने भी झेला, हमने भी झेला। इसमें 50 साल के बारे में आप लोग चिन्ता क्यों करते हैं? सर, मेरा यह कहना है कि यहां जो मौका मिला, उसका उपयोग करके इनके ऊपर कटाक्ष करने, उनके ऊपर कटाक्ष करने या शाप देने से कुछ नहीं होगा। जो होना है, वह 2014 में हो गया और जो होना है, बाकी है, वह 2019 में दोबारा होगा, उसमें भी कोई अनुमान नहीं है, विश्वास नहीं है। आप लोगों को विश्वास है न? सब चेंज हो गया, बदलाव हो गया, सब हमारा साथ दे रहे हैं। आप थोड़ा 2019 तक वेट कीजिए, तब आपको मालूम हो जाएगा कि कितने और भी मार्जिन से आप हारना चाहते हैं। उस समय लोग तय करेंगे। सर, मेरा यह कहना है, I am coming back to the main issue. What was the issue on which we fought elections in 2014? The issue was mainly corruption, scams, scandals, coal scam, 2G scam, Commonwealth Games scam, scam after scam. That was the issue. Not only those scams, but there were other scams also. That was the issue. It was debated. We put forth our point of view; you put forth your point of view effectively. You tried to defend but people were offended and then they gave a mandate to us. Now some people are saying suddenly. कुछ लोग कह रहे हैं परसों मैंने देखा, कुछ लोगों ने कहा कि यह फंडामेंटल राइट है। क्या ब्लैक मनी होर्ड करना फंडामेंटल राइट है? क्या ब्लैक मनी सर्कुलेट करना फंडामेंटल राइट है? क्या पाकिस्तानी जाली नोट देश भर में डिस्ट्रिब्यूट करना फंडामेंटल राइट है? जो आतंकवादी हैं, जो अलगाववादी हैं, जो स्मगलर्स हैं, जो टेरिस्ट्स हैं और जिन लोगों के पास इन सब का पैसा है, क्या उनका यह फंडामेंटल राइट है? मैं आपकी अनुमति से आज दिल्ली से निकले हुए एक अखबार यहां टेबल पर रखना चाहता हूँ। “Red funds in black hole — ₹ 7,500 crore amount of money buried in the red corridor of jungles. I do not want to quote extensively from that. They gave some more details. Same is the case about what happened in Assam also, the other day a lot of money was thrown on the main roads by the so called terrorists and their supporters. The point is that the people expected us to take a clear stand. The entire Parliament should have taken a clear-cut stand, yes, what

is happening is bad, this proposed move is good and these are the shortcomings in that. ये कमियां हैं। ये-ये प्रिकॉशंस लेने थे, यह नहीं लिया, यह प्रिकॉशन लो, यह हमारा सुझाव है। ऐसी बहस होगी, देश की जनता ने यह अपेक्षा की थी। मगर दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोग बेसिक प्रिंसिपल को अपोज कर रहे हैं। बाहर बता रहे हैं कि हम अपोज नहीं कर रहे हैं, लेकिन अन्दर अपोज कर रहे हैं और हमें डिक्टेटर्स के साथ कम्पेयर कर रहे हैं, वैसे लोगों के साथ कम्पेयर कर रहे हैं। यह क्या dilemma है? आप पहले dilemma से बाहर आइए। कांग्रेस पार्टी से मेरा अनुरोध है कि कृपया वह अपनी लाइन तय करे। किसी पार्टी की निन्दा करना मेरा उद्देश्य नहीं है। I have no intention. But please come out of this dilemma. Are you in favour of these hoarders? Are you in favour of the smugglers? Are you in favour of the people who are hoarding this money, who are distributing these counterfeit notes, who are running a parallel economy? Or are you in favour of some strong steps? Are you in favour of taking some corrective steps if necessary? Let it be very clear. Unfortunately, it is lacking. This step of the Government led by Shri Narendra Modi has enhanced the confidence of the people in the political system itself. It was lacking for years. यह तो होगा ही। कोई भी आएगा, कुछ होने वाला नहीं है। That was the impression. वह भावना थी। वह भावना अब दूर हो रही है। लोगों को विश्वास आ रहा है कि भई, एक व्यक्ति आया है, जो कम से कम करके दिखा रहा है और ठोस कदम उठा रहा है। तो इसलिए सर, इतनी तकलीफ होने के बावजूद भी लोग अभी भी प्रधान मंत्री जी की देश भर में प्रशंसा कर रहे हैं। आप टीवी चैनल्स देख रहे हैं। कुछ चैनल्स हमारे खिलाफ भी चला रहे हैं, फिर भी उसमें लोगों से पूछ रहे हैं, तो लोग बता रहे हैं कि यह तकलीफ तो है, लेकिन फिर भी देश के हित में अच्छा है। 'Temporary pain for long term gain' is buzz word across the country. Sir, I can assure the entire country of one thing, if your money is valid, it will not become invalid. Some of the issues raised by my friends in detail, relevant issues, will be answered, not the other issues; Gaddafi and other issues. We do not want to go into that. If your money is valid, it will not become invalid. Take that assurance. About other things, we will discuss. Some people are saying 'suddenly'. What is sudden? Everybody should be informed to take precautions and move it to other places and then announce! Does it mean that everybody should be informed to take precautions and move it to other places, and we should, then, announce the step? Is that your suggestion? I am not able to understand!

Sir, the Prime Minister wants every citizen to be pure, not only in thought but also in action. That is why we have 'Swachh Bharat'. What is 'Swachh Bharat'? It is not just about cleaning the roads, cleaning the schools or toilets, *mandirs, masjids, gurudwaras or churches*. That is also a part of the campaign. 'Swachh Bharat' means Clean India. Secondly, तन से, मन से और धन से स्वच्छ। 'तन' means body, 'मन' means mind. Purity of mind means 'Betí Bachao, Betí Padhao', no atrocities against women, no black money, following the rules of the game, no atrocities on weaker sections,

[Shri M. Venkaiah Naidu]

discrimination on the basis of religion or caste. मन से वह परिवर्तन आना चाहिए। तीसरा, धन से; it is the money which is wreaking havoc on the political system, as somebody has mentioned, as also on the public life in the country and which is widening the gulf between the rich and the poor, where the poor are becoming poorer while the rich are becoming richer. The refrain is that यह तो हुआ नहीं, दो साल में हुआ नहीं। मेरे कुछ मित्र कह रहे हैं कि आपने उद्योगपतियों का यह किया, वह किया। क्या देश में सभी उद्योगपतियों ने दो साल तीन महीने में इतना बड़ा होकर, इतना पैसा इकट्ठा कर लिया? I would like to put one straight question to all the people who spoke in that language. Were these rich people, the corporates, who have so much money, born and grew only in these two years and three months of the Narendra Modi Government? Who was in Government in Delhi? From Parliament to Panchayats, from *Mukhya Mantris* to municipalities, पूरा अधिकार आप लोगों के हाथ में दे दिया। Crony capitalism किसने बनाया? किसके जमाने में 2G scam, coal scam और CWG scam हुआ? Do some soul-searching and, then, point an accusing finger at us. Please don't use that language at all. It will hurt you. It will boomerang on you because you have ruled the country, and ruined the country, for long. That is one point.

Secondly, Sir, the Prime Minister wants a behavioural change in the country. The behavioural change, change of mindset, मन में परिवर्तन आना चाहिए। खुले में शौचालय की जो व्यवस्था है, वह बंद होनी चाहिए और अगर लड़की पैदा हो गई, तो उसको मारने की जो प्रवृत्ति है, उससे बचना और साथ ही साथ देश में तन से, मन से, धन से साफ तरीके से पूरा व्यवहार हो, यह प्रधान मंत्री का उद्देश्य है। You may disagree; you may try to heckle me too, but the country is welcoming it. The country is behind the Prime Minister. Sir, this is literally a war on corruption and black money. You have to decide on which side you are. ...(Interruptions)... Yes, it is a war. It is a *mahayagna*. You have to decide. It is like the *Takshaka* went and caught hold of Indra's chair; in the *yagna*, at the end of the day, Indra was also about to fall. He had to leave the *Takshaka*, the *sarpa*, at that time. So, similarly, anybody trying to defend these offenders would be taken to task by the people.

Sir, I now come to the main issue about the decision taken by this Government. It is an important decision taken by this Government. I am also a Minister in this Government. Now, on day one, what was the agenda of the Cabinet? The first item on the Cabinet's agenda on day one was constitution of a Special Investigation Team headed by Justice M.B. Shah, as suggested by the Supreme Court, which you had neglected for a year or more; you had not bothered to implement the Supreme Court's advice or directive. The first thing that was taken up at Narendra Modi Government's first Cabinet meeting, as the first item of the agenda, was about constituting a Special Investigation Team. There were only two issues on

the agenda that day. One was the SIT and the second one, what my friend, Shri Jairam Ramesh, could not do despite his intent, was about bringing an Ordinance on Polavaram. The Undisclosed Foreign Income and Assets (Imposition of Tax) Act, 2015, which came into effect on July 1st, 2015, was another step. The other steps initiated in line with the Government's thinking included constitution of a multi-agency group into Panama Paper leaks, joining global efforts to combat tax evasion and black money by signing Multilateral Competent Authority Agreement in respect of Automatic Exchange of Information (AEIO). That was the third step. The fourth was the Information Sharing Arrangement with the US under its Foreign Account Tax Compliance (FATCA). That was the fourth initiative taken by the Government. Fifth is, India entered into a Double Taxation Avoidance Agreement, DTAs, in several countries, including tax havens like Mauritius and Cyprus. An Automatic Exchange of Information Agreement was also negotiated with Switzerland to clamp down on black money. These are the steps taken by our Government. You have not bothered about it. Those Agreements, which have prevented those countries from giving the information where they took shelter, were all entered during our period or earlier in your regime's period, not by our Government. But our Government is seriously committed to eradicate black money. We have taken all these concrete steps not in one day, तीन महीने या छः महीने जो आप बता रहे हैं, ऐसा नहीं है। From the day one to November 8, one after another, the Prime Minister was trying to vacate black money, get the black money, identify the offenders and also take them to task.

Sir, recently, the Income Declaration Scheme was also implemented, and at that time, the Prime Minister warned on *Man Ki Baat* that this would be the last chance for tax evaders. Sir, this is what he has said on *Man Ki Baat*. If some people have not heard it and they have not understood it also, and they were still thinking ऐसा तो होता रहता है, ऐसा तो बोलते रहते हैं। पुराने जमाने में भी ऐसा होता रहा है, अब ऐसा कुछ होने वाला नहीं है, then, we can't help it. Now, some of them are in such a position, Sir, that they can neither sleep nor weep. That is the position of such people because they have money behind their beds and they are not able to do anything. Now, that is why they are trying to puncture this by diverting the attention of the people by making dubious and ridiculous arguments of trying to puncture the entire campaign. I appeal to the people, the political parties, please don't do it. Whatever the shortcomings, you are entitled to raise them; it is your duty, your bounden duty, to come to the House and explain that and highlight the problems of the people. But, questioning the very intentions, questioning the very process, which my friend, Shri Pramodji, has done it now — trying to say who are against it, whoever does it, whose names he has given, etc. — is very, very objectionable, Sir. The Prime Minister on his *Man Ki Baat* said, before taking any extreme step, the Government

[Shri M. Venkaiah Naidu]

must give a chance to the people, and so, my dear brothers and sisters, this is a golden chance for you to disclose your undisclosed income. And in other way, this is the way out to save yourself from any trouble that could arise after 30th of September, 2016. Please underline this. I do not want that you should face any problems after 30th September. This is what the hon. Prime Minister himself said on *Man Ki Baat* addressing the entire country. Anybody who has got some sense, anybody who has got some fear of law, could have responded positively. Some of them have responded also. Some money has come out also, ₹ 65,000 crores. You may say it is a very small amount because you have more knowledge of how much money was accumulated in the last fifty years. You will be knowing that. But, at least, ₹ 65,000 crores also is not a small amount. Some good amount of money has come up from the foreign banks accounts also. That is my fifth submission.

Then, Sir, the news about this leak is absurd. Some Opposition Parties are getting impatient and making absurd allegations. I don't want to link it with any elections. My friend, Nareshji, was telling it is all because of U.P. Sir, in this country, every six months, every one year, there is an election festival, one election or other takes place. After U.P., it may be H.P. After that, it may be some other State. Like that, lots of elections are taking place in the country. If you do anything, people will try to attribute, no, no, people kept in mind that you have done it, people have this in mind that you have done it and all. So, that argument has no validity at all.

Then, the Prime Minister and the Government firmly believes that our country is mostly made of honest people. But dishonest people are in minority, minority not in the sense of religious or other minority. People who are looting and cheating the system, their number is few, but they are mighty, they are powerful, they have kept all this money, not the ordinary people, not the farmer, not the labour, not the toddy tapper, not the weaver, not the fisherman, not the household maid and all. They don't have. Only the top people or the rich people or some politicians, maybe, here and there. — I don't know, I don't want to get into that terrain also--and then some organizations which are involved in anti-national activities, are really worried. So, people who have thrived on corruption, people who have thrived on opportunism and nepotism, greed, electoral malpractices etc., are now trying to put an accusing finger at this Government. Sir, it needs guts to say ऐसा कभी हुआ नहीं है। एक आग्युमेंट यह है। दूसरा आग्युमेंट यह है कि पहले भी ऐसा हो चुका है, मोरारजी भाई के जमाने में हुआ है। अभी चिदम्बरम जी ने बोला कि मोरारजी के जमाने में हुआ है। The total amount that was involved at that time was ₹ 8,600 crores roughly. What is the size of the economy at that time and what is the size of the economy now? You must understand. What was the

circulation of the higher denomination notes at that time? It was 5-6 to 7-8 per cent. Now, it is 82 to 84-86 per cent. Everybody is discussing about that very action. So, the problem is very serious now. That is why this serious step has been taken by the Government. The Prime Minister has shown that he has the political will and the administrative skill. That is why he has taken this decision. Sir, the Prime Minister is regularly taking the review meetings. He is trying to address whatever problems are coming up one after another. And every primary point is being addressed too. Now, about the demonetization of currency, our friend Pramodji was telling as if a big crime has been committed. Pramodji, you had done the devaluation of money and who was the Prime Minister at that time Shri Narendra Modi? In 1975, you put Emergency and who was the Prime Minister at that time-Shri Narendra Modi? You tore the Press and who was the Prime Minister-Shri Narendra Modi? You devalued the rupee and defamed the country. Who was the Prime Minister at that time? Now, the entire world, including the International Monetary Fund and every organization, is saying that India has taken a good leap. The Prime Minister of the country is being appreciated by one and all. You go around the entire country, at every nook and corner, आप अटक से लेकर कटक तक, कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक सभी राज्यों में जाकर लोगों से पूछिए, किसी भी व्यक्ति के मन में सरकार की नीयत के बारे में, मोदी जी के कमिटमेंट के बारे में कोई शंका नहीं है, यह आपको मालूम हो जाएगा।

एक विषय तकलीफों के बारे में है, जो कि temporary हैं। उन तकलीफों के बारे में लोग चर्चा करते हैं, जो स्वाभाविक है। Sir, I am from a village. Recently, I went to Atmakur taluk, Chiramana village in Nellore district, my own district, and I asked a farmer कि क्या है? उन्होंने कहा कि सर, थोड़ा सा है, पर आप चिन्ता मत कीजिए, प्रधान मंत्री जी ने अच्छा किया है। फिर मैंने उनसे पूछा कि अगर ऐसी तकलीफ है और आप दुकान में जाएँगे तो क्या होगा? इस प्रकार की बातें करते-करते उन्होंने कहा कि सर, बच्चे को पैदा करना है तो उसके लिए भी कष्ट झेलना पड़ेगा। उन्होंने तेलुगु में उसे प्रसव वेदना कहा। जो प्रसव वेदना होती है, उसमें 15 दिन, 20 दिन और फिर 48 घंटे में मां को इतना दर्द होता है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते, क्योंकि हम लोग पुरुष हैं।

श्री सुखेन्दु शेखर राय (पश्चिमी बंगाल): एबॉर्शन में भी होता है क्या? ...(व्यवधान)...

श्री एम. वेंकैया नायडु: उसका मुझे अनुभव नहीं है। ...(व्यवधान)... बच्चा पैदा हुआ है, उस समय मैंने अपनी पत्नी की हालत देखी है। Then afterwards, the moment, the mother hears the sound, जिसे तेलुगु में "केका" कहते हैं, जब वह आवाज आती है, तो बहुत संतोष होता है, बहुत आनन्द महसूस होता है, with a great relief. This, as I told you, temporary thing is also going to get a long-term gain. Please understand this and don't try to haggle it and don't try to hit the poorer section.

SHRI JAIRAM RAMESH: When is the mother going to give a cry of happiness?

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Rameshji, already people are enjoying it. You are going to know of it a little later and that is because you are not the mother, you are only a father. Sir, what are the effects, side-effects and after-effects of demonetization? We have to analyze it. Sir, it will give a fillip to the farmer economy. Second, it will improve the tax collection. It will open up opportunities for the poor and middle classes. It will badly hit the funding for arms smuggling, espionage, terrorism and put an end to large circulation of counterfeit currency. I was the Chairman of the Standing Committee on Home Affairs where Members had expressed their concern – Neerajji was there and Nareshji was also there — particularly in the border districts, not all the districts, everybody can understand how serious the problem is. So, we have to keep all these things in mind, all aspects of what our neighbour is trying, that is, aiding, abetting, funding, training terrorism and also circulating this counterfeit currency and then parallel economy being run by some people. Ultimately, the worst affected are the poor people. One of the reasons is why the poor today are seen as dumb fellows, the way people are making the celebrations and the way they are spending a huge amount of money! Without working hard, they have earned the money. This fellow, in spite of working hard, is not able to have that much facility. So, that is why, the moment, this decision is taken, whether you know the full consequence of it or not, the common people are very happy with the Prime Minister and also they are all appreciating about the boldness of this decision. I know, Sir, there is a lot of earburning among some people. Some are very angry; some are very angry about Shri Narendra Modi. They are angry for so many reasons, and some of them have become intolerant from the day one he has become the Prime Minister. There is a new intolerance, *i.e.*, intolerance towards the mandate of the people. That is the mandate of the people, Sir. The people have given a mandate to Modiji. After a gap of 30 years, able leader, stable Government has come to the country. Things are changing.

Sir, small, small issues are being raised, even about urea shortage. I, as an MLA, used to raise this issue in the Assembly a number of times; sometimes we walked out also. There was firing also in Gadak area of Karnataka because of shortage of urea. And this Prime Minister, after coming to know what are the reasons, came out with an idea of neem-coated urea, and in two years, there is no shortage, no line, no queue, no waiting list and black market. *...(Interruptions)...* Then, Sir, the propaganda...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, neem-coated urea is a 25-year old idea. It was first introduced in India 25 years ago. *...(Interruptions)...* Don't say like this.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Yes, 25-year old idea... *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: If you want a factual debate, I will debate with you.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Yes. फेक्च्युअल डिबेट है, तो आप फिर भूल गए कि एमरजेंसी लगाई थी ...(व्यवधान)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, he is manufacturing the facts.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: If it is a 25-year old idea, you had an idea, but you never implemented the idea. This great man has implemented the idea and has given a great relief to the people.

SHRI NEERAJ SHEKHAR: Great man!

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Yes, he is a great man, undoubtedly. He is the tallest political leader not only in the country but also in the entire world. The entire world is now recognizing and respecting Shri Narendra Modi. This is not to please anybody. I need not please anybody, I can tell you. The Prime Minister of India is recognized and respected everywhere, worldwide, wherever he goes, America, China, Germany, Japan, Singapore, Malaysia, Canada or Australia. Wherever he is going, people are saying Modi, Modi, Modi. ...(Interruptions)... Why? It is because of the historic decision he has taken, the bold reforms he is implementing. Sir, he has given a three-line *mantra*. He said, "Reform, Perform and Transform." Now, when the transformation is taking place, some people are hurt.

SHRI JAIRAM RAMESH: What about deform? ...(Interruptions)..

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Some people are hurt. ...(Interruptions).. Please bear with me. ...(Interruptions)... We have really faced all these things for 50 years. Please have some understanding and patience.

Sir, the gains of demonetization, as I was telling you, will enable the Government to recapitalize the banks, wipe out the fiscal deficit and achieve the goal for large-scale infrastructure that is required. It will also add to the social spending which can lead to unprecedented inclusiveness in the economy and growth. Everyone has to make a choice whether they are in the side of the black money, hoarders or the common people. This is a devastating strike on the corrupt. I don't know why some people are shedding tears for those people. They do not deserve any sympathy at all, whatsoever. But, unfortunately, certain voices, certain parties, certain noises are being made to defend them, that too, they are not defending them openly, they are doing it in a surreptitious manner indirectly by raking up some issues which are not related.

Sir, the other day, I was there in a State. Then, suddenly, there was a rumour, and people started saying, नमक, नमक, नमक नहीं है, नमक नहीं है। नमक के लिए क्यों ब्लैक मार्केट? मैंने कहा नमक व्हाइट होता है, ब्लैक कैसे होता है। उन्होंने कहा, है ही, सर, what to

[Shri M. Venkaiah Naidu]

do, salt is now sold in black market. After we made enquiries, we found that 220 lakh tonnes is the production of salt. The consumption is only 60,000 tonnes. So, salt is available. Within one or two days, it was over. Some of State Governments had alerted the civil administration in the districts and all, then, the situation was brought under control. This is the way of vested interests, who are trying to weaken the entire move of the Prime Minister by spreading such untruths, such canards and such rumours. These rumours have no basis.

Sir, same is the case now in the social media. We know that some people are systematically spreading wrong messages. ...*(Interruptions)*..

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: Others are appreciating.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: But if you see the social media also, Sir, overwhelmingly, the social media is praising the Prime Minister. Even the children are adding new, new ideas and they are coining such words to highlight the greatness of our Prime Minister. But some people are coming out with ridiculous arguments — as I told you, shortage of salt — and some people are spreading rumours also that एम्प्लॉइज की सेलेरी में भी यही प्रॉब्लम होगी। कुछ नहीं होगा, आप चिन्ता मत करो। It is a historic, revolutionary and bold step by the Prime Minister to cleansing the public life of money power. Hats off to the Prime Minister, Sir. This is a historic step to fight corruption. Only the Prime Minister can do it. The entire country is happy. You could not do it, and here is a person who is doing it, and you do not have that much large heart — I am not asking you to have enlargement of heart — you must have at least a large heart to acknowledge and appreciate the Prime Minister. You have got every right to castigate us whenever we do wrong. There were certain shortcomings. To address those shortcomings, the hon. Prime Minister is holding review meetings every day. The Finance Minister is continuously monitoring the situation. Whatever steps that are needed to be taken are being taken. Separate lines for aged and disabled people are immediately done. Separate lines for deposits, exchange and withdrawals also are thought of. Since we have only 82,000 branches and 2,20,000 ATMs of banks, we think, they are not sufficient. That is why we have pressed into service the Bank Mitras numbering 1,20,000. We have also pressed into service the Post Offices; they also have been activated and they have also been given protection. For payment to various Government services, exemption has been given. On the national highways, there was a problem and that has been attended to. In petrol pumps, there was a problem and that has been attended to. In toll gates, there was a problem and that has been attended to. As I told you, with regard to important aspects, whatever is possible has been done.

The people are sending congratulatory messages to the Prime Minister and all of us. I don't know why some people are so agitated. They are agitated only because of one thing. They are agitated because the popularity graph of the Prime Minister is going up. ...*(Interruptions)*... आप हंसिए, मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। आप हंसिए। ...*(व्यवधान)*... मेरी पार्टी वालों ने भी कहा कि वे जितनी बहस करना चाहें, उतनी बहस करने दीजिए। इस बहस में किसने क्या बोला, उनकी जो historical quotations हैं — अभी-अभी हमारे मित्र प्रमोद तिवारी जी ने यूज कीं — ऐसी historical golden quotations को we will preserve. We will pass it on to the people and remind them as and when required. किसने क्या कहा, किसकी आपत्ति क्या है, किसके मन में क्या विषय है, वह सब जनता के सामने आएगा। लोकतंत्र ऐसे ही चलता है।

Sir, the people are showing monumental patience and discipline. They are queuing for a better India. Otherwise, they would not have taken this much pain. They know the intents of the man, the leader. They know the moral stand of the Government. They know the purpose of this fight against corruption. That is why the people are patient. That is why the people are taking that much pain.

Sir, in the last eight days, the poor, the common man and other honest people have made the most profound statement ever made in our country in the recent times, that they don't mind putting up with short-term inconveniences for the larger good. That is the message. The people seem to be more intelligent than many of us, the politicians. Those people, who have been standing in queues for hours, are standing to exchange or withdraw notes with the valid currency.

Sir, as I told you, in any transformation, there is some problem. There are problems now with regard to the division of the State of Andhra Pradesh and Telangana. There are some problems which are addressed to. There are also problems to be addressed again. There are problems on the farm sector. But, they are not created within these two years. I only expected the House, that too the Rajya Sabha, the Upper House, where learned people are there, a greater and enlightened debate to give us new ideas. The Government is open. The Prime Minister is open. If there are meaningful advices, if there are valid suggestions, the Government is trying to respond to them from time to time without standing on prestige or whatever. The prestige of the country that we are a honest nation, the prestige of the country that the Indian people are honest, has to be restored. That is what is being done by the Prime Minister. So, let us not try to divert the issue. The need of the hour is to celebrate the honesty and root out dishonesty from public life and all our systems. The decision is part of our grand strategy in that direction.

Sir, we are all aware of the ground realities. You may say whatever about elections. Sir, as you know, whenever election comes, three things are there—selection,

[Shri M. Venkaiah Naidu]

collection and election. That has become a regular problem. All of us have gone through that system. How painful it is, how difficult it is to mobilise money! We all have gone through that process. So, one need not give lessons to others about this. I don't know why my friend, Digvijayaji, is smiling at me. He has got more experience than me.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: I must compliment the Prime Minister for choosing the right person as the Information and Broadcasting Minister. The new goebbels of India has arrived! ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Thank you, Mr. Deputy Chairman, and my friends, Digvijaya Singhji and Rameshji. Sir, what I am trying to say is that स्वयं स्वीकृतं कंठकाकीर्णं मार्गम्। We know that the path which we have chosen is full of thorns. There will be problems. Simply because there are going to be problems and if you don't make efforts, then you will never succeed. A leader is the person who leads, who takes bold and innovative decisions and faces the consequences. The country is fortunate to have a leader. Digvijayaji just now was trying to score a point over me. Yes, the Prime Minister said, "Reform, perform, transform." I added 'inform', that is what I am doing. ...*(Interruptions)*... रिफॉर्म होगा, तो कौन, क्या होगा, चुनाव में तय होगा।

श्री नीरज शेखर: हर चीज़ चुनाव में तय नहीं होती है।

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: For fifty years we have seen the Goebbels propaganda, 'poor, poor, poor' and poor have become poorer. गरीबों के लिए घोषणा, अमीरों के लिए पोषणा, यही होता रहा यही चलता रहा, bank nationalization, Privy Purses abolition. What happened to the poor, what is going to happen to poor after this decision, the country is going to witness that and the history will tell us who is really pro-poor, who is only by mere words and not by deeds is in favour of poor. That will be decided. Sir, I only appeal at the end. Some people are saying that the counterfeit is only two per cent, one per cent and all. Shri Manmohan Singh, hon. Former Prime Minister, who is a great economist, will be knowing better about this particular position. The information I have is that the extent and spread of parallel economy, its share in America is 8.6 per cent, in Japan 11 per cent, in U.K. 12.5 per cent, in China 12.7 per cent, in France 15 per cent, in Germany is 16 per cent and in India it is 22.2 per cent. This is the figure available on the net by some wellmeaning people. Let us also do soul searching why such a situation is there, why we are allowing the parallel economy. Is it not time for all of us to join together and see to it that this thing is done? Sir, I will conclude by saying this last thing. The Prime Minister, keeping it in mind, on the day one told us in a Cabinet meeting that we must open bank accounts for all people. I am a little senior

in age, so I said, "Sir, we will complete it during our tenure." He said, "Tenure!" मैंने कहा कि जो काम 50 साल में नहीं हो पाया, उसको 5 साल में पूरा करें, तो अच्छा होगा। उन्होंने कहा कि नहीं। "It should be done in a year or so." The Prime Minister is Prime Minister. So, finally, Sir, today in a short span, there are Rs. 25.43 crores Jan Dhan bank accounts that are opened. Sir, banks accounts are opened. Anybody who has got some knowledge should have understood why banks accounts are being opened. Then steps are taken one after another. *...(Interruptions)...* Please bear with me. *...(Interruptions)...* We are Upper House and we are Elders. *...(Interruptions)...* Children will be looking at us. *...(Interruptions)...* Sir, one after another, five-six steps have been taken by the Government both at the international level and at the national level and now also the Government is very keen if there are better areas, if there are some more areas which are left out to be tackled, to effectively flush out the black money, the Government is ready. Then we will give credit to you that this idea is of Jairam Rameshji, which he had forgotten for the last 25 years, I am thankful to him. *...(Interruptions)...* We can acknowledge that also. I am passing the information to the hon. Prime Minister, "Sir, the idea of Urea is not yours. It was of Jairam Rameshji or his party. They have forgotten in 25 years but now we have done it. They are saying, acknowledge us also." We have no problem. *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: It also done in 25 years also. *...(Interruptions)...*

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Then why there were firings, why there were queues, why the House also used to talk out and walk out also on Urea? I was a Member of the Legislative Assembly in 1978 and 1983. A couple of times we raised the issue, even Rameshji in your State also, in your original State. *...(Interruptions)...* Both of us have the original State. *...(Interruptions)...* We go around the country. *...(Interruptions)...* I have been to Karnataka, I have been to Rajasthan, my daughter lives in Chennai, my son lives in Hyderabad, I live in Delhi, partly in Telangana. *...(Interruptions)...* We are all Indians. *...(Interruptions)...* We are भारतीय। अलग भाषा, अलग भेष, फिर भी अपना एक देश। विविधता में एकता, भारत की विशेषता। यह भारत की परम्परा है। Let us all join together. *...(Interruptions)...*

श्री डी.पी. त्रिपाठी (महाराष्ट्र): एबीवीपी *...(व्यवधान)...*

श्री एम. वेंकैया नायडु: हां, त्रिपाठी जी को भी एबीवीपी के बारे में याद आया। मैं भी एबीवीपी का पुराना पायलेट हूँ। *...(Interruptions)...* Let us all join together to have a more constructive, meaningful debate so that the menace of black money is rooted out. Thank you very much, Sir. Namaskar.